



तत् त्वं पूषन् अपावृणु  
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

# चिरंतर

## विद्यालय पत्रिका

### VIDYALAYA MAGAZINE



**पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय ओ.एल.एफ देहरादून**

PM SHRI KENDRIYA VIDYALAYA OLF DEHRADUN

**सत्र : 2024-25**

**दूरभाष / Phone (O) 2788742**

Website: <http://dehradunolf.kvs.ac.in>

E Mail: [kvolfraipur1234@gmail.com](mailto:kvolfraipur1234@gmail.com)



# हमारे संरक्षक

## मुख्य संरक्षिका



डॉ. सुकृति रैवानी

उपायुक्त

केंद्रीय विद्यालय संगठन देहरादून

## हमारे प्रेरणा स्रोत



श्री सुरजीत सिंह

सहायक आयुक्त

केंद्रीय विद्यालय संगठन देहरादून

## मार्गदर्शिका



श्रीमती रचना देव

प्राचार्या

पी एम श्री केन्द्रीय विद्यालय ओ एल एफ  
देहरादून



केन्द्रीय विद्यालय संगठन, देहरादून संभाग  
KENDRIYA VIDYALAYA SANGATHAN, DEHRADUN REGION  
क्षेत्रीय कार्यालय, सातावाला, हाथीवड़कला, देहरादून (उत्तराखण्ड)  
वेबसाइट : [www.kvsrodehradun.in/](http://www.kvsrodehradun.in/) ईमेल : [ackvsroddr@gmail.com](mailto:ackvsroddr@gmail.com)  
दूरभाष : 0135—2749510 (DC) , 2743192 (AC), 2746371 (AO)

## संदेश



अत्यन्त हर्ष का विषय है कि पी०एम० श्री केन्द्रीय विद्यालय ओ०एल०एफ० देहरादून अपनी वार्षिक पत्रिका का प्रकाशन कर रहा है। विद्यालय पत्रिका विद्यालय की वार्षिक गतिविधियों का दर्पण है, जिसमें विद्यार्थियों की रचनात्मक अभिवृत्तियां प्रतिबिंबित होती है। विद्यालय की पत्रिका ज्ञान, कला और सृजनात्मकता की वह त्रिवेणी है जिसमें न केवल विद्यार्थियों की प्रतिमाओं को अविरल प्रवाह प्राप्त होता है वरन् उन्हें कल्पनात्मकता और शिल्प के अभिनव आयाम भी मिलते हैं।

इस पत्रिका के प्रकाशन के सुअवसर पर मैं विद्यालय के सभी विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं संपादकीय मंडल को अपनी शुभकामनायें प्रेषित करती हूँ। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका नवोदित प्रतिभाओं के विचारों और सपनों को सभी से सांझा करेगी और विद्यार्थियों में ऊर्जा और उमंगों की तरंगें भरेगी।

आईये, एक साथ मिलकर सफलता के नये सोपान गढ़ें। निष्ठावान प्रयासों से प्रगति पथ पर आगे बढ़ें।

शुभाकांक्षी

( डा० सुकृति रैवानी )  
उपायुक्त

# संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त हर्ष की अनुभूति हो रही है कि पी एम श्री केंद्रीय विद्यालय ओ0एल0एफ0, देहरादून अपनी वार्षिक पत्रिका के साथ प्रस्तुत है। वर्ष भर की विद्यालयी गतिविधियों तथा अनुभूतियों की प्रतीक विद्यालय की वार्षिक पत्रिका विद्यार्थियों की सुकोमल भावनाओं को प्रस्फुटित होने का सहज अवसर प्रदान करती है, ऐसा मेरा विश्वास है।

अपनी प्रतिष्ठित परम्पराओं के अनुरूप यह पत्रिका बाल सुलभ नैसर्गिक अभिव्यक्तियों को अर्थ प्रदान करेगी। पत्रिका अपने उद्देश्य में पूर्णरूपेण सफल हो, इसी कामना के साथ अपनी हार्दिक शुभकानाएं प्रेषित करता हूँ।



सी0एस0 ठाकुर

महाप्रबन्धक

ओ0एल0एफ0, देहरादून

नामित अध्यक्ष

पी एम श्री केंद्रीय विद्यालय

ओ एल एफ, देहरादून





पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय ओ.एल. एफ., देहरादून  
PM SHRI KENDRIYA VIDYALAYA O.L.F., DEHRADUN  
शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार के अधीन स्वायत्त संस्थान  
An autonomous Body Under Ministry Of Education, Govt. of India  
रायपुर, देहरादून / Raipur, Dehradun 248008 दूरभाष/Telephone: 0135-2788742  
वेबसाइट/ Website: <https://dehradunolf.kvs.ac.in>  
ई-मेल/E-Mail: [kvolfraipur1234@gmail.com](mailto:kvolfraipur1234@gmail.com)  
सीबीएसई संबद्धता नं./CBSE Affiliation No: 3500030  
स्कूल कोड /School Code: 84055  
UDISE NO:-05050504817



फ० / 2024-25/के०वि० ओ० एल० एफ० /

दिनांक: 17.02.2025

## प्राचार्या की कलम से



पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय ओ एल एफ रायपुर, देहरादून की ई-पत्रिका आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। मुझे आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका हमारे विद्यार्थियों में अंतर्निहित प्रतिभाओं को साहित्य के आकाश में उड़ान के नूतन आयाम प्रदान करने में पूर्णतः सक्षम होगी।

विद्यालय की वार्षिक पत्रिका का उद्देश्य ही विद्यार्थियों की वैचारिकता और कल्पनात्मकता को निखारना और उनकी अनुभूति और अभिव्यक्ति को प्रखरता देना है। इस प्रयास के लिए इन नवोदित प्रतिभाओं को मेरा साधुवाद।

साथ ही मैं संपादक मंडल से संबद्ध सभी शिक्षक वृंद के निष्ठावान प्रयासों की भी सराहना करती हूँ जिन्होंने विद्यार्थियों के अनगढ़ प्रयासों को इस पत्रिका में सांझा किए जाने की पात्रता प्रदान की।

पत्रिका से जुड़े सुझावों की हमें प्रतीक्षा रहेगी।

शुभकामनाओं सहित

श्रीमती रचना देव

रचना देव

(प्राचार्या)

पी०एम० श्री केन्द्रीय विद्यालय  
ओ०एल०एफ० देहरादून



# संपादक - मंडल

## संरक्षिका

(डा० सुकृति रैवानी)

उपायुक्त

के.वि.सं.(क्षेत्रीय कार्यालय) दे. दून

## निर्देशिका

(श्रीमती रचना देव)

प्राचार्या

पीएम श्री के.वि. ओ.एल. एफ., दे. दून

## हिंदी - विभाग

श्रीमती स्वाति पांडे

प्रशिक्षित स्नातक शिक्षिका हिंदी

## संस्कृत - विभाग

श्री उपेन्द्र प्रसाद

प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक संस्कृत

## अंग्रेजी - विभाग

श्रीमती कामना नेगी

प्रशिक्षित स्नातक शिक्षिका अंग्रेजी

## कला विभाग

श्रीमती नमिता गैरोला

प्रशिक्षित स्नातक शिक्षिका कला

## टाइपोग्राफी, डिजाइनिंग व छायांकन

श्री संजय सिंह बिष्ट (कम्प्यूटर प्रशिक्षक)

## विद्यार्थी संपादक - मंडल

प्रियंका

11 स

सौम्या

11 स

शशांक चहल

11 अ

मान्या गौनियाल

11 अ



# अनुक्रमणिका

**01**

**सन्देश**

माननीय उपायुक्त महोदया  
का सन्देश एवं आशीर्वचन

**02**

**प्राचार्य की कलम से**

प्राचार्य महोदया का आशीर्वचन

**03**

**संपादक मंडल**

संपादक मंडल के सदस्यों के विभाग एवं  
कार्य

**04**

**हिन्दी एवं संस्कृत विभाग**

विद्यार्थियों एवं अध्यापकों के द्वारा हिंदी  
एवं संस्कृत भाषा में रचित लेख

**05**

**अंग्रेजी विभाग**

विद्यार्थियों एवं अध्यापकों के द्वारा  
अंग्रेजी भाषा में रचित लेख

**06**

**रचनात्मक परियोजना कार्य**

छात्रों द्वारा विभिन्न किर्या कलापों में किये  
गए रचनात्मक कार्यों की एक झलक





# विद्यालय के गौरव

टापर्स सत्र 2024-25

कक्षा बारहवीं

आँचल ध्यानी  
विज्ञान वर्ग  
91.4%



वैष्णवी  
वाणिज्य वर्ग  
92.6%

रिया कुमारी  
मानविकी वर्ग  
92.2%





# विद्यालय के गौरव

टापर्स सत्र 2024-25

कक्षा दसवीं

मनु राना  
दसवीं  
99.2%



धृति घई  
दसवीं  
97.4%

वंशिका भण्डारी  
दसवीं  
96.0%





*Manu Rana*



1. सीबीएसई दसवीं कक्षा में देहरादून जिले में सर्वोच्च अंक प्राप्त किये।
2. केवीएस देहरादून क्षेत्र में सर्वोच्च अंक प्राप्त किये।
3. केवीएस राष्ट्रीय स्तर पर दूसरा स्थान प्राप्त किया।
4. सीबीएसई देहरादून क्षेत्र के स्कूलों में तीसरा सर्वोच्च अंक प्राप्त किये।





# खेलकूद

---



**रिद्धिमा ममगाई**

कक्षा दसवीं

**स्वर्ण पदक**

बास्केटबाल

---



**रिया गुप्ता**

कक्षा दसवीं

**स्वर्ण पदक**

बास्केटबाल

---



**रिद्धि जोशी**

कक्षा सातवीं

**रजत पदक**

ताईक्वान्दो

---

# अन्य क्रिया कलाप

---



**देवांश मणि कौशिक**  
कक्षा नवीं  
**स्वर्ण पदक**  
एसएफए चैंपियनशिप उत्तराखंड  
2023-24  
शतरंज

---



**आदित्य ठाकुर**  
कक्षा चौथी  
राष्ट्रीय स्तरीय विज्ञान प्रतिभा खोज  
परीक्षा 23-24 में **राज्य में तीसरा**  
तथा **राष्ट्रीय स्तर पर 593वां स्थान**  
प्राप्त किया है।

---





# हिन्दी

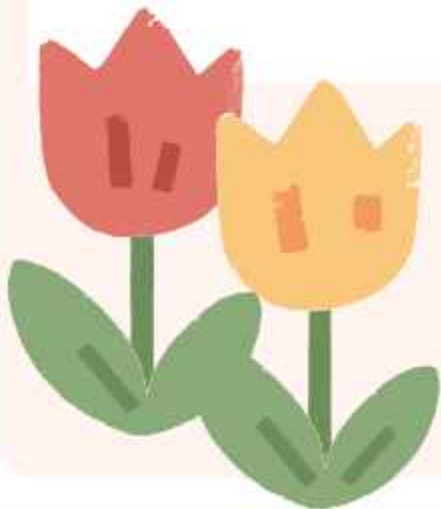
# अनुभाग

## हिंदी

लिखें. पढ़ें. बोलें. गर्व करें.



हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं



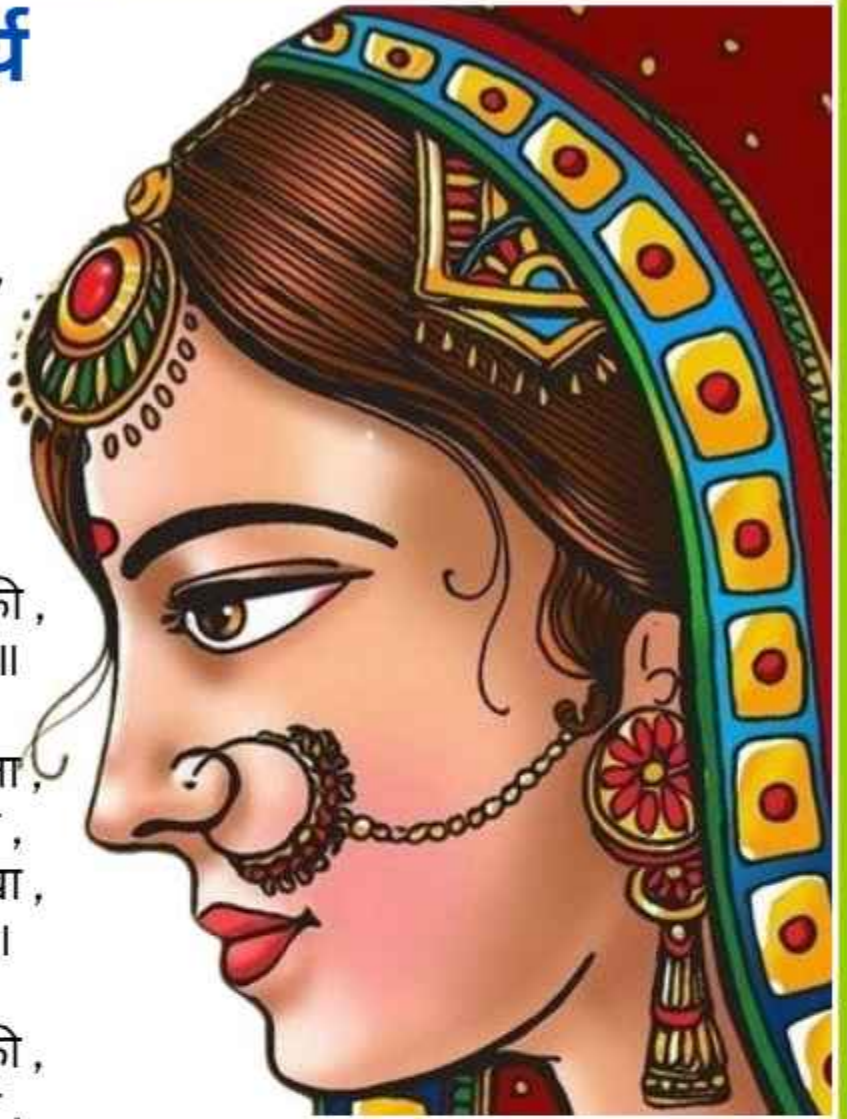
# सौन्दर्य

मैंने सौन्दर्य ढूँढा मुझे वो मिला,  
मैंने देखा रूप में वो ठहरा हुआ,  
मैंने रूप के धाम का पूछा पता,  
तो यौवन उसका नाम मिला ॥

मैंने यौवन के मित्र की पूछ की,  
तो ब्रह्मचर्य के संग बैठा मिला,  
और ब्रह्मचर्य के अम्बा की खोज की,  
तो श्रद्धा की गोद में हँसता मिला ॥

मैंने फिर श्रद्धा के मनु का पूछा पता,  
तो विश्वास उसके अंक लगा मिला,  
और जब विश्वास की आँखों में देखा,  
तो सत्य उसमें से झाँकता मिला ॥

मैंने फिर सत्य के धाम की खोज की,  
वो सहृदयता में करता वास मिला,  
और जब सहृदयता के साथी का पूछा पता,  
तो "सत्यम, शिवम, सुंदरम" उनका नाम मिला ॥



**मनीषा भारद्वाज**

स्नातकोत्तर शिक्षिका

पी एम श्री के वी ओ.एल.एफ. देहरादून



## एक जीवन बदलने वाली यात्रा: जिज्ञासा से आत्मविश्वास तक

जब मैं सातवीं कक्षा में था, तब हमारे एक शिक्षक ने हमें एन.सी.एस.सी.(नेशनल चिल्ड्रेन साइन्स कॉंग्रेस) नामक प्रतियोगिता के बारे में बताया। पहले तो मैंने इसे अनदेखा कर दिया, यह सोचकर कि यह भी अन्य प्रतियोगिताओं की तरह ही होगी जिन्हें मैं टाल देता था। लेकिन फिर मेरे दिमाग में एक विचार आया— बांस का उपयोग संरक्षण और पौधों की वृद्धि को बढ़ाने के लिए किया जा सकता है।

मैंने यह विचार अपने शिक्षक के साथ साझा किया, और उन्होंने मुझे इसे आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित किया।

मैं और मेरे साथी ने क्षेत्रीय स्तर के लिए चयनित होने के लिए कड़ी मेहनत की। इसी बीच में वार्षिक उत्सव की तैयारियों में भी व्यस्त था। अचानक हमें पता चला कि वार्षिक उत्सव के दिन ही क्षेत्रीय चयन होने वाला है। समय की कमी के बावजूद हमने अपनी फाइलें पूरी की और प्रस्तुति की तैयारी की। हमने मिलकर प्रेजेंटेशन दिया और हमारी मेहनत रंग लाई हम चयनित हो गए! लेकिन तभी हमारे शिक्षक ने हमें बताया कि केवल टीम लीडर ही क्षेत्रीय स्तर पर जा सकता है। चूंकि मैं टीम लीडर था, मुझे अपने साथी पर आश्रय हुआ, क्योंकि उसने खुशी-खुशी मुझे यह मौका दे दिया। उस क्षण मुझे एहसास हुआ कि अब मुझे अपना सर्वश्रेष्ठ देना होगा, क्योंकि सभी मुझसे उम्मीद कर रहे थे।

मैंने क्षेत्रीय स्तर के लिए जमकर अभ्यास किया, लेकिन यह मेरा पहला प्रतियोगिता प्रदर्शन था, इसलिए मैं काफी घबराया हुआ था। जब वह दिन आया तो मैं अपने शिक्षक और दो वरिष्ठ छात्रों के साथ कार्यक्रम स्थल पर पहुंचा। वहां पहुंचकर मैंने प्रतियोगिता के उच्च स्तर को महसूस किया। प्रतियोगियों को पांच श्रेणियों में विभाजित किया गया था, और प्रत्येक श्रेणी को कनिष्ठ (जूनियर) और वरिष्ठ (सीनियर) वर्गों में बांटा गया था। पहले वरिष्ठ छात्रों ने प्रस्तुति दी। जब वे लौटे, तो मैंने उनसे उनके अनुभव के बारे में पूछा। उन्होंने मुझे कुछ उपयोगी सुझाव दिए।

जूनियर वर्ग की प्रस्तुतियां शुरू होते ही मेरा दिल तेजी से धड़कने लगा। सौभाग्य से, मेरी बारी सबसे पहले नहीं थी, इसलिए मैंने दूसरों से उनके अनुभवों के बारे में पूछा। फिर मेरा नंबर आया। मैंने आत्मविश्वास के साथ प्रस्तुति दी और अपनी पूरी कोशिश की। प्रस्तुति समाप्त होने के बाद, मैंने जजों को धन्यवाद दिया और स्कूल लौट आया। परिणाम अगले दिन घोषित होने वाले थे, जिस कारण पूरी रात मैं बेचैन रहा।

अगली सुबह, हमें फिर से आयोजन स्थल ले जाया गया। पहले हमें कुछ सांस्कृतिक कार्यक्रम दिखाए गए, फिर परिणाम घोषित किए गए। हमारे सीनियर वर्ग में कोई भी चयनित नहीं हुआ, जिससे हम थोड़े निराश हुए। फिर जूनियर वर्ग की बारी आई, और मेरी श्रेणी सबसे अंत में थी। जब उन्होंने मेरे स्कूल का नाम पुकारा, तो मेरी आंखों में आंसू आ गए, लेकिन मैंने मुस्कुराते हुए मंच पर कदम रखा। मैं राष्ट्रीय स्तर के लिए चयनित हो गया था!

जब मैं मंच पर था, तो मैंने अपनी शिक्षिका को किसी गुप में मैसेज करते हुए देखा। उस समय मैंने इस पर ध्यान नहीं दिया। घर पहुंचकर जब मैंने अपनी माँ को यह खबर सुनाई, तो वह खुशी से झूम उठी। अगले दिन, जब मैं स्कूल पहुंचा, तो सभी शिक्षक मुझे देखकर मुस्कुरा रहे थे। एक शिक्षक ने मुझे बधाई दी, और तभी मुझे एहसास हुआ कि मेरी शिक्षिका ने शिक्षकों के मुख्य समूह (ग्रुप) में मेरी सफलता की खबर साझा कर दी थी। यह जानकर मुझे बहुत गर्व हुआ, और मेरा आत्मविश्वास और बढ़ गया।

अब मुझे बताया गया कि राष्ट्रीय प्रतियोगिता दो महीने बाद बेंगलुरु में होगी। मैं बेहद उत्साहित था। यह पहली बार था जब मैं बिना अपने माता-पिता के यात्रा करने वाला था। एक 12 वर्षीय बच्चे के लिए यह बहुत बड़ी बात थी। मैंने अपनी तैयारी के लिए एफ आर आई (फॉरेस्ट रिसर्च इंस्टीट्यूट) में एक शोधकर्ता से मुलाकात की, जिन्होंने मुझे मेरे विषय से संबंधित महत्वपूर्ण शोध पत्र दिए।

फिर वह दिन आया, जब मुझे अपनी यात्रा पर निकलना था। मेरी शिक्षिका मुझे अपने विद्यालय से लेकर एक अन्य विद्यालय ले गईं, जहां सभी प्रतिभागियों को एकत्रित होना था। जल्द ही मैंने वहां नए दोस्त बना लिए। रात को हमें रेलवे स्टेशन ले जाया गया, जहां मेरे माता-पिता मुझे विदा करने आए। मेरे पिता मेरे आई डी कार्ड की पुष्टि कर रहे थे, तभी मेरे एक दोस्त ने मुझसे पूछा, "ये कौन हैं?" मैंने उसे बताया कि वे मेरे पापा हैं। मुझे यह पल मजेदार भी लगा और भावुक भी।

ट्रेन से सफर शुरू हुआ। यात्रा के दौरान हमने कॉमिक्स पढ़ीं, स्नेक्स खाए और यू एन ओ (UNO) खेला। जब हम हजरत निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन (दिल्ली) पहुंचे, तो हमें दूसरी ट्रेन पकड़नी थी। वहां हमें कई घंटे इंतजार करना पड़ा, जिसे हमने खेलकर और बातें करके बिताया। सुबह 6 बजे हमारी अगली ट्रेन आई, और हम खुशी से "जय हो के.वी.एस." के नारे लगाते हुए उसमें सवार हुए।

बेंगलुरु की यात्रा अद्भुत रही। रास्ते में हमने कई अलग-अलग राज्यों की संस्कृति और खानपान को देखा। ट्रेन में हमने अंताक्षरी, लुडो, और अन्य खेल खेले। जब हम बेंगलुरु पहुंचे, तो हमें शहर की आपुनिकता देखकर आश्चर्य हुआ। वहां हिंदी की तुलना में कन्नड़, तमिल, और मलयालम अधिक बोली जा रही थी।

प्रतियोगिता के दिन, हमारी प्रस्तुति की बारी लॉटरी सिस्टम के माध्यम से तय की गई। चूंकि प्रतिभागियों की संख्या बहुत अधिक थी, इसलिए दो दिनों तक प्रस्तुतियां चलीं। मेरा नंबर पहले दिन आ गया, और मैंने अपनी पूरी कोशिश की। हालांकि, मुझे लगा कि मैं और भी बेहतर कर सकता था।

प्रतियोगिता के बाद, हम HAL (हिंदुस्तान एरोनॉटिक्स लिमिटेड) गए, जहां हमें ड्रोन उड़ाने का प्रदर्शन दिखाया गया। शाम को हमें AI (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) पर एक व्याख्यान दिया गया। एक मजेदार पल तब आया जब एक लड़की, जिसे सवाल पूछने का मौका नहीं मिला था, जोर से चिल्लाई, "मुझे भी सवाल पूछना है!" यह सुनकर सभी जोर से हंस पड़े।

अंततः परिणाम घोषित होने का समय आया। मुख्य अतिथि के स्वागत के लिए हम सब खड़े हुए, अब समय था परिणाम घोषित होने का, और जैसे-जैसे मेरी श्रेणी करीब आई, मैं बेहद तनाव में आ गया। लेकिन इस बार मेरा नाम नहीं पुकारा गया। मेरे राज्य के किसी भी छात्र का चयन नहीं हुआ, लेकिन हम निराश नहीं हुए। हमने इसे एक शानदार अनुभव के रूप में लिया जिसने हमें बहुत कुछ नया सिखाया और हमने इसका जश्न मनाया।

अगले दिन, हमने बेंगलुरु को अलविदा कहा और अपने घर लौटने के लिए ट्रेन में बैठ गए। जम्मू-कश्मीर टीम भी हमारे साथ थी। ट्रेन में हमने फिर से खेले, और इस बार रात में हमारे शिक्षक ने संगीत बजाया, जिससे हमने नाचते-गाते सफर का आनंद लिया। जब हम दिल्ली पहुंचे, तो योजना में बदलाव किया गया और हमें ट्रेन के बजाय बस से भेजा गया। सभी यात्री थके हुए थे, इसलिए यह यात्रा कुछ शांत रही।

देहरादून पहुंचते ही मेरे पिता मुझे लेने आए। घर लौटकर जब मैं बिस्तर पर लेटा, तो मैंने उन रातों को याद किया जब मैं क्षेत्रीय और राष्ट्रीय परिणामों की चिंता में सो नहीं पा रहा था। मुझे एहसास हुआ कि यह यात्रा मेरे जीवन की सबसे महत्वपूर्ण यात्राओं में से एक थी। इस यात्रा ने न केवल मेरे आत्मविश्वास को बढ़ाया, बल्कि मुझे सिखाया कि अगर मैं कोशिश करूं, तो कुछ भी संभव है। यह केवल एक यात्रा नहीं थी यह एक परिवर्तनकारी अनुभव था, जिसने मुझे जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा दी।

शौर्य कोटनाला  
नवीं 'ब'



# प्रकृति की सुंदरता

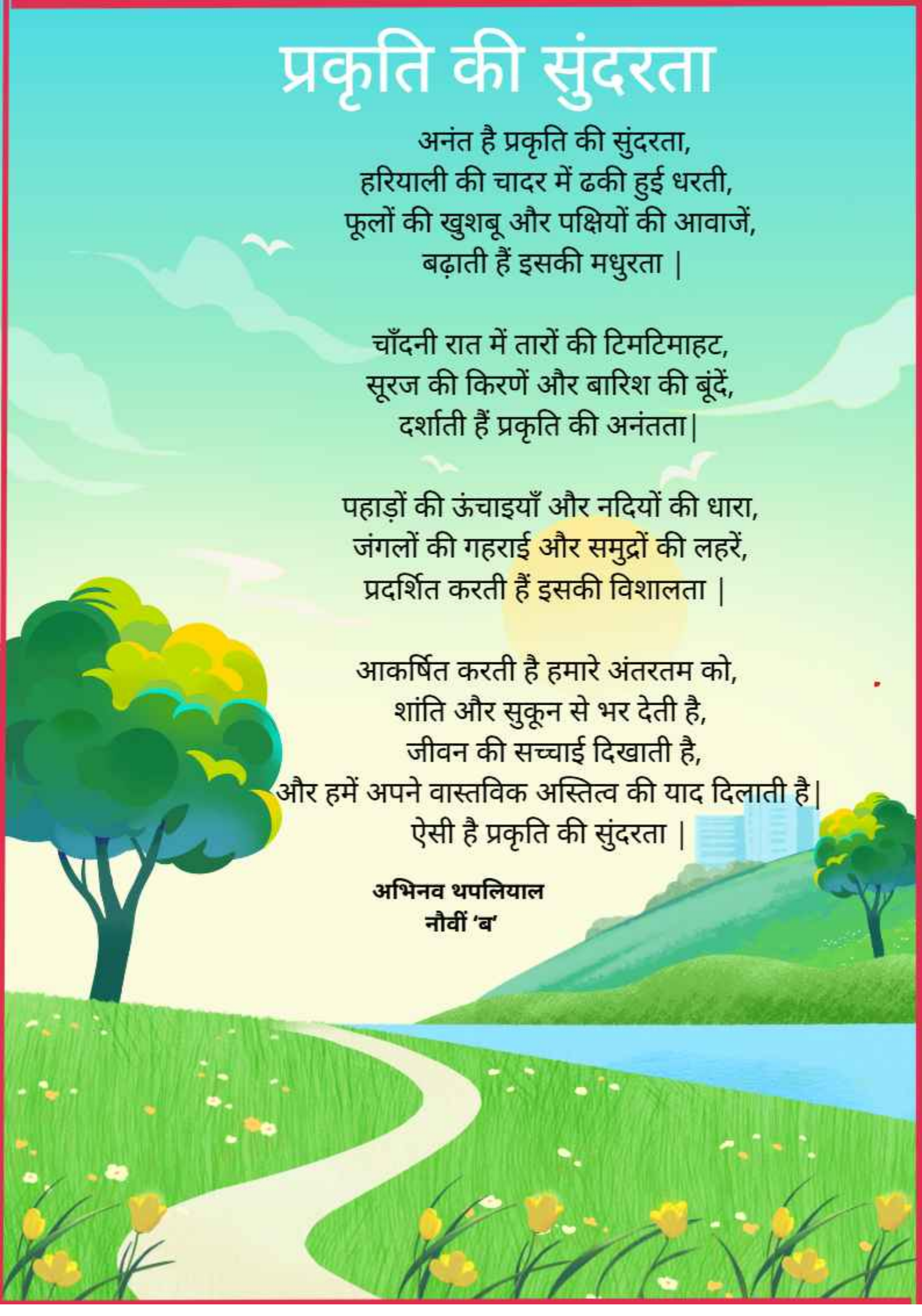
अनंत है प्रकृति की सुंदरता,  
हरियाली की चादर में ढकी हुई धरती,  
फूलों की खुशबू और पक्षियों की आवाजें,  
बढ़ाती हैं इसकी मधुरता ।

चाँदनी रात में तारों की टिमटिमाहट,  
सूरज की किरणें और बारिश की बूंदें,  
दर्शाती हैं प्रकृति की अनंतता ।

पहाड़ों की ऊंचाइयाँ और नदियों की धारा,  
जंगलों की गहराई और समुद्रों की लहरें,  
प्रदर्शित करती हैं इसकी विशालता ।

आकर्षित करती है हमारे अंतरतम को,  
शांति और सुकून से भर देती है,  
जीवन की सच्चाई दिखाती है,  
और हमें अपने वास्तविक अस्तित्व की याद दिलाती है।  
ऐसी है प्रकृति की सुंदरता ।

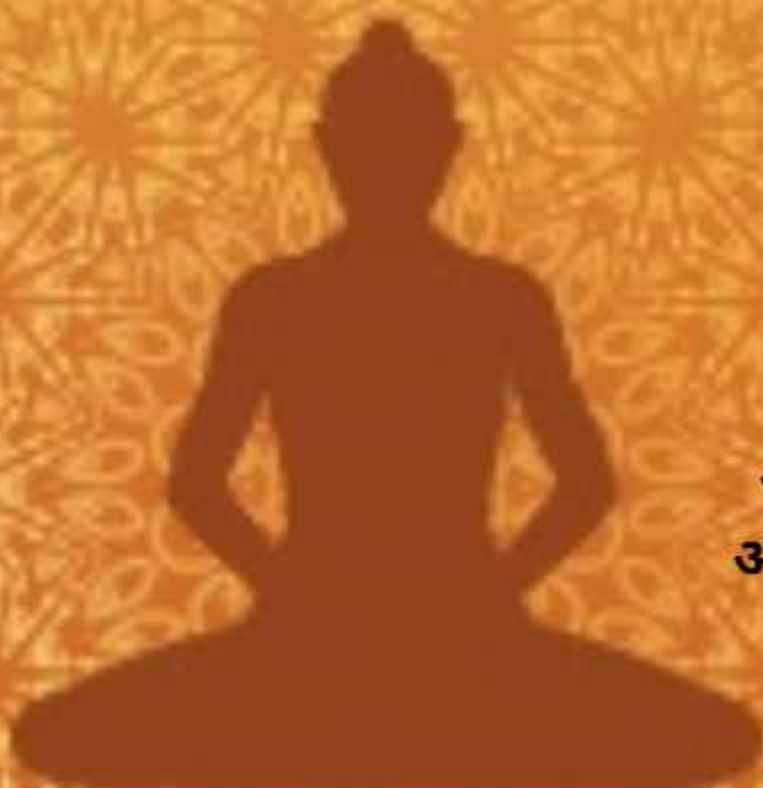
अभिनव थपलियाल  
नौवीं 'ब'





## योग

योग करो भई योग करो ,  
हर बीमारी को दूर करो।  
सुबह शाम शुद्ध भोजन करो,  
जंक फूड को दूर करो ,  
योग करो भई योग करो  
तन - मन को मजबूत करो,  
योग करो भई योग करो ।  
योग से तन फुर्तीला मन शांत करो ,  
एक घंटा सुबह , एक घंटा शाम करो,  
आलसपन को दूर करो,  
योग करो भई योग करो।  
हर बीमारी को जड़ से दूर करो,  
योग करो भई योग करो।  
आओ योग दिवस पर प्रतिज्ञा करो,  
प्रत्येक मानव को प्रेरित करो,  
मिल जुल कर योग करो,  
योग करो भई योग करो।



अंशिका  
आठवीं 'अ'

## परीक्षा पे चर्चा

परीक्षाएं जब आती है,  
बच्चों को बड़ा सताती है।  
मस्ती भरा माहौल छीन कर,  
तनाव उन्हें दे जाती हैं।  
डर, व्याकुलता और प्रश्नों ने,  
जब बच्चों की चिंता बढ़ाई।  
परीक्षा पर करके चर्चा,  
मोदी जी ने उम्मीद जगाई।  
अपने अनुभव उन्हें सुना कर,  
उनकी समस्याओं का समाधान किया।  
सफलता के मूल मंत्र बताकर,  
उनका जीवन आसान किया।  
मोदी जी के वचनों ने,  
बच्चों का मार्ग प्रशस्त किया।  
अपनी परीक्षा के लिए,  
जैसे उनको आश्चस्त किया।  
परीक्षा का यह त्यौहार,  
दिवाली से कम नहीं है।  
तनाव को पटाखों की तरह जला दो,  
चारों ओर शांति और खुशियाँ बिखरा दो,  
परीक्षाओं को भी यदि तुम,  
त्योहार की तरह मनाओगे।  
इससे तनाव नहीं होगा फिर,  
खुशियां ही तुम पाओगे।  
खुशियां ही तुम पाओगे ॥



श्लोक निषाद  
सातवी 'अ'



# मेरी माँ

मेरी माँ, प्यारी माँ  
प्यारी सी है मेरी माँ।  
हजार दुख सहकर भी,  
कुछ न कहती मेरी माँ।  
दिन भर काम करती,  
फिर भी न थकती मेरी माँ।  
अगर मुझे कोई आँच भी आती,  
सामने खड़ी रहती मेरी माँ।  
मेरी माँ, प्यारी माँ।  
मन की भोली-भाली माँ।  
खुद भूखा रहकर भी,  
हमें खिलाती मेरी माँ।  
मेरी माँ प्यारी माँ,  
प्यारी सी है मेरी माँ।

अमान्या श्रीवास्तव  
छठी 'ब'





## सुभाष चंद्र बोस

भारत मां के वीर सपूत ,  
सब बच्चों को प्यारे हैं .  
नाम है सुभाष चंद्र बोस  
सारी दुनिया से न्यारे हैं .

गोरे को मार भगाने वाली ऐसी की लड़ाई थी,  
देखकर उनका आत्मविश्वास गांधी जी ने उनको दी बधाई थी.  
आजाद हिंद फौज बनाई, जिससे गोरे घबराए थे ,  
ऐसी लड़ाई लड़के गोरों के छक्के छुड़ाए थे।  
भारत मां के वीर सपूतों पर हमको अभिमान है ,  
हम सब बच्चे हो उन जैसे हम सबका अरमान है॥

जीतू राणा  
सातवीं 'अ'



# मेरे प्यारे वतन

कुछ इस तरह से जीने की चाहत है मुझे,  
मैं मरु भी तो तेरे लिए ऐ वतन।  
तू सरजमीं है मेरी इसकी राहत है मुझे,  
मैं कुछ करु भी तो तेरे लिए ऐ वतन।  
तुझमें बसता हूँ मैं, मेरे दिल में तू है,  
आसान है सफ़र जब मंज़िल में तू है।  
सामने हो तिरंगा और एक फ़क्र की मुस्कुराहट हो,  
लेता रहूँगा मैं जन्म अगर जन्मभूमि मेरी भारत हो।

संचित शर्मा  
ग्यारवीं 'अ'



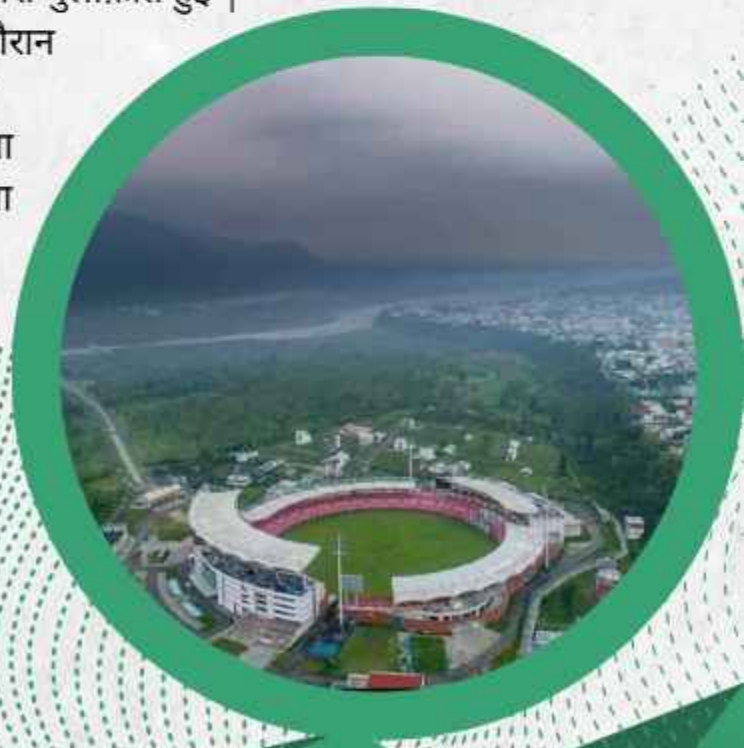


## महाराणा स्पोर्ट्स कॉलेज की यादगार यात्रा

29 जनवरी 2025 के दिन पूरे विद्यालय में बच्चों के उत्साहजनक चेहरे धूप में चमक रहे थे । क्योंकि उस दिन खेल के प्रति इच्छुक विद्यार्थी महाराणा प्रताप स्पोर्ट्स कॉलेज की सैर करने के लिए चयनित किए गए थे । प्राचार्य महोदया ने हमारे साथ एक फोटो खिंचवाई जिससे यह यादगार पल कैमरे में कैद हो गए । हमने फिर विद्यालय से रवाना होकर अपनी-अपनी गाड़ियों में अपना स्थान ग्रहण किया और भगवान जी के जयकारे लगाए और प्रार्थना की कि हमारा सफर मंगलमय वह उल्लासमय हो । वहां गेट पर पहुंचते ही अलग प्रकार का वातावरण देखने को मिला जो अनुशासन, स्वच्छता, मेहनत व निष्ठा को दर्शाता था । हम लोगों ने सबसे पहले रग्बी खेल का लुप्त उठाया, जिसमें हम सब उलझन में थे क्योंकि यह खेल हमारे लिए बिल्कुल नया था और आश्चर्यजनक भी क्योंकि हमने यह खेल न पहले खेला था ना देखा था । हमें गर्व होना चाहिए कि हमारे देश की महिलाएं अपने देश का नाम अनेक स्तरों पर ऊंचा कर रही हैं। हम अपने स्थान को अलविदा कहकर हंसते खिलखिलाते हुए सांस्कृतिक कार्यक्रम को देखने गए। प्रवेश द्वार पर दो युवतियों ने हमारा स्वागत पवित्र तिलक से किया । वहां पर हमारी भेंट मौली (38 वे राष्ट्रीय खेल के मैस्कोट) से हुई। वहां से हम बास्केटबॉल का खेल देखने के लिए रवाना हुए। रास्ते में कई खिलाड़ी दिखे जो एक अलग ही जोश में थे और मेडल की भूख में थे । हमारे विद्यालय में लगभग सभी बच्चे बास्केटबॉल खेलना पसंद करते हैं। खिलाड़ियों को देखकर खेल के प्रति हमारा जोश और अधिक बढ़ गया । बास्केटबॉल कोर्ट से बाहर आते ही हमारी भेंट भारत की सबसे लंबी महिला बास्केटबॉल प्लेयर पूनम चतुर्वेदी से हुई, वह सचमुच बहुत ही लंबी थीं । आखिरी में हम सब लोग ऑडिटोरियम में जा पहुंचे , जहां पर मानसी जोशी जो पैरालंपियन 2019 में स्वर्ण पदक विजेता रही थी जिन्हें 2020 में टाइम मैगजीन ने “नेक्स्ट जेनरेशन लीडर 2020” की सूची में डाला था और अपने एशिया कवर पर उनकी तस्वीर भी छापी थी वे ऐसा सम्मान पाने वाली भारत की पहली एथलीट और विश्व की पहली पैरा एथलीट बन गईं। 11 अक्टूबर 2020 को ‘इंटरनेशनल दे ऑफ द गर्ल चाइल्ड’ के दिन बाबी बनाने वाली कम्पनी ने उनके सम्मान में उनके जैसी दिखने वाली बाबी डॉल बनाई, उनसे हमारी मुलाकात हुई ।

इनका जीवन बड़ा संघर्ष से भरा था । इन्होंने एक दुर्घटना के दौरान अपना एक पैर खोने के बावजूद भी खेल के प्रति अपना जुनून व लगाव कम नहीं होने दिया । इन्होंने खेलों की दुनिया में अपना कदम फिर से रखा और भारत का नाम अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ऊंचा किया। हमें वहां जाने से असली मेहनत का महत्व पता चला और विश्व प्रसिद्ध खिलाड़ियों से मिलने का अवसर प्राप्त हुआ । इतने सुंदर और प्रेरणादायक अनुभव को प्राप्त करने का सुअवसर हमें प्रदान किए जाने के लिए मैं अपनी प्राचार्य महोदया जी का अपने हृदय की गहराइयों से आभार व्यक्त करती हूं ।

आस्था  
नौवीं 'ब'







## मधुर वाणी

मधुर वाणी हमारे जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है । हमें हमेशा मधुर वाणी बोलनी चाहिए । मधुर वाणी से हम अपने शब्दों और विचारों को इतना आकर्षक बना सकते हैं कि दूसरे लोग हमारी बातों और विचारों को ध्यान से सुने और समझे । हमें कभी भी अपने मुँह से किसी के लिए भी अपशब्द नहीं निकालने चाहिए । जो कड़वा बोलता है, उसे कोई पसंद नहीं करता और जिस व्यक्ति की वाणी मधुर होती है वो व्यक्ति सभी का प्रिय होता है । मधुर वाणी का महत्व हमें हमारे दैनिक जीवन में भी दिखाई देता है। जब हम अपने दोस्तों, परिवार के सदस्यों या सहकर्मियों से प्रेम पूर्वक बात करते हैं तो हम अपने संबंधों को और मजबूत बना सकते हैं । इसलिए हमें हमेशा मधुर वाणी का उपयोग करना चाहिए । कबीर दास जी ने कहा है कि

**‘ऐसी वाणी बोलिए, मन का आपा खोए,  
और न को शीतल करे, आपहुँ शीतल होए।’**

रिया अष्टवाल  
आठवीं ‘अ’



# यात्रा वृत्तांत

इस बार की छुट्टियों में हम लोग गुजरात घूमने गए थे। हमने बहुत मस्ती की और कई जगहों पर घूमने गए। हमने मांडवी, चोटिला मंदिर, कच्छरण और मुंद्रा की यात्रा की। चोटिला में हम 1000 सीढ़ियां चढ़कर चोटिला मंदिर पहुंचे, जो राजकोट में स्थित है। कच्छरण में बहुत सारा नमक है, जबकि मांडवी में हमने अरब सागर का सुंदर दृश्य देखा।

गुजरात में हम लोग अपनी मौसी के घर गांधीधाम, आदिपुर में ठहरे हुए थे। घर के नज़दीक एक बहुत ही सुंदर पार्क था, जहाँ हम लोग रोज शाम को घूमने जाते थे, वहाँ पर बहुत सारे झूले लगे हुए थे। जिनमें हम सभी लोग बारी बारी से झूला झूलते थे। गुजरात में नमक की खेती बहुत होती है, और यहाँ पर बहुत सारे ट्रक चलते हैं। गुजरात की सीमा का अंत कच्छरण से होता है, और कच्छरण के आगे पाकिस्तान का बॉर्डर आ जाता है। गुजरात के बॉर्डर की सुरक्षा बी एस एफ करती है। गुजरात की राजधानी गांधीनगर है।

इसके साथ ही हम लोग भुज घूमने भी गए। भुज गुजरात का एक शहर है जो कच्छ जिले में स्थित है। यह शहर अपने ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व के लिए जाना जाता है। भुज के आसपास कई घूमने वाली जगहें हैं, जो पर्यटकों को आकर्षित करती हैं। जैसे :-

1. कच्छ म्यूजियम:- यह भारत का पहला म्यूजियम है जो कच्छ की संस्कृति, इतिहास और कला को प्रदर्शित करता है।
2. भुजियो दुर्ग:- यह एक प्राचीन किला है जो भुज शहर के मध्य में स्थित है। यह किला 17वीं शताब्दी में बनाया गया था।
3. श्रीस्वामीनारायण मंदिर:- यह एक प्रसिद्ध मंदिर है जो स्वामीनारायण संप्रदाय के अनुयायियों के लिए महत्वपूर्ण है।
4. हामिसर झील:- यह एक सुंदर झील है जो भुज शहर से लगभग 25 किलोमीटर दूर है। यह झील पक्षियों के लिए एक महत्वपूर्ण आवास स्थल है।
5. मांडवी बीच:- यह एक सुंदर समुद्र तट है जो भुज से लगभग 60 किलोमीटर दूर है। यह बीच अपने शांत और स्वच्छ वातावरण के लिए जाना जाता है।
6. कच्छरण:- यह एक विशाल रण (नमक का मैदान) है, जो भुज से लगभग 100 किलोमीटर दूर है। यह रण अपने अनोखे भूगोल और जैवविविधता के लिए प्रसिद्ध है।
7. धोलावीरा:- यह एक प्राचीन शहर है जो भुज से लगभग 120 किलोमीटर दूर है। यह शहर सिंधु घाटी सभ्यता के अवशेषों के लिए प्रसिद्ध है।

इन सुंदर और महत्वपूर्ण स्थानों में घूमने के साथ साथ हमने पढ़ाई भी की और छुट्टियों के पूरे मजे लिए |

अर्पिता ममगाई  
कक्षा -5 (ब)





# हमारी दोस्ती

हमारी दोस्ती  
सबसे निराली ।  
प्रथम कक्षा से चली आ रही  
हम रहते साथ-साथ,  
खाना खाते साथ-साथ,  
मस्ती करते साथ-साथ।  
पढ़ाई करते साथ - साथ  
पर एक दिन ऐसा कुछ हुवा,  
हम हो गए अधूरे।  
टूटे टूटे बिखरे बिखरे  
नए साथी आए ,  
लेकिन पुराने को भुला ना पाए  
वो पुराना वाला मजा ना लाये  
वो बार बार हमे याद आए ।  
हमने फिर प्रेम का दीप जलाया  
बिछुड़े मित्र को अपने गले लगाया  
गीत दोस्ती का फिर गाया ।  
खुशियों को अपने पास बुलाया ।  
और ये रिश्ता पक्का बनाया ।  
छोटी छोटी बातों को फिर मुंह ना लगाया ।  
अपने दिल को बड़ा और रिश्ते को गहरा बनाया ।

तेजस्वी सिंह  
सातवीं अ



## पेड़



पेड़ हैं सचमुच नीलमणि  
पेड़ हैं जीवन की अनमोल कड़ी।  
पेड़ ऑक्सीजन छोड़ते हैं  
जो बनती हैं हमारी सांसें  
वे हमें देते हैं जीवन निधि  
फल , फूल , लकड़ी , औषधि  
सभी से है एक प्रार्थना  
पेड़ों को काटना बंद करो ,  
पेड़ बचाओ, पेड़ लगाओ  
पर्यावरण हरा भरा बनाओ ।

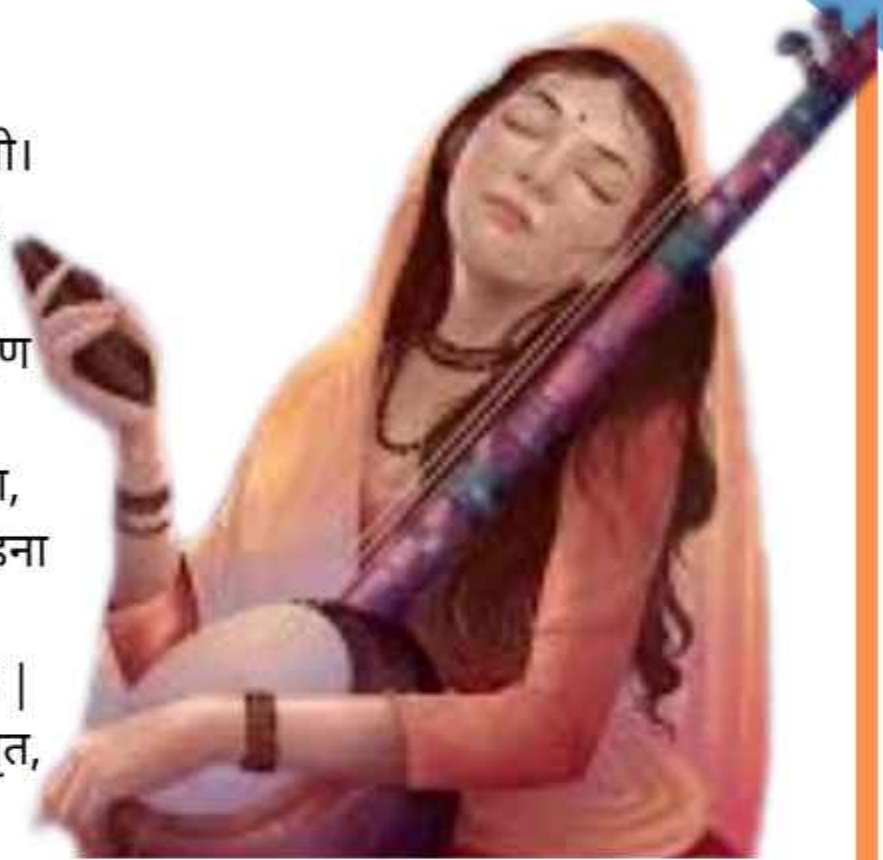
प्रभाती  
5 'अ '





# मैं तेरी मीरा

मैं तेरी मीरा  
न मैं तेरी राधा मोहन  
ना ही तेरी रुक्मणी  
मैं तो तेरी मीरा मोहन  
क्यों तुझको मेरी प्रीत खली।  
तेरे गुण गाऊँ साँझ सवेरे,  
तेरे लिए छोड़ संसार  
तुम पर तो है मेरे प्राण अर्पण  
मांग लो पिया एक बार।  
मैया बाबुल सब कुछ छूटा,  
अब ना तुम बिन मुझको रहना  
जब से लागी प्रीत तोरी  
भूली सब सुख, भूली चैना।  
प्यार से तुम विष दो या अमृत,  
हँसते हँसते पी लूंगी।  
तुमने दी जो जुदाई  
तुम्हारी स्मृतियों के सहारे  
मैं भी जी लूंगी...  
ना मैं तेरी राधा मोहन  
ना ही तेरी रुक्मणी  
मैं तो तेरी मीरा मोहन  
क्यों तुझको मेरी प्रीत खली।



अंशिका सिंह  
ग्यारवीं अ

## आलेख - इंसानियत का रिश्ता

दोस्तों, इस दुनिया में कई सारे रिश्ते हैं। जैसे- माँ और संतान का रिश्ता, पिता - पुत्री का रिश्ता, भाई - बहन का रिश्ता, पति - पत्नी का रिश्ता या मित्रता अथवा शत्रुता का रिश्ता। पर रिश्तों की इस भीड़ में एक रिश्ता है जो अब बिल्कुल पीछे खड़ा नज़र आता है। बहुत दबा और सहमा सा अलग-थलग सा पड़ा, वह है - इंसानियत का रिश्ता। सबसे महत्वपूर्ण पर सबसे उपेक्षित। अपनी दशा पर आंसू बहाता और अपनी किस्मत को कोसता।

दुर्घटना हुई। चारों तरफ चीख - पुकार मच गई। लोग दौड़े आए। घायलों को डूबती साँसों के बीच आस बंधी, जान बचने की, सहायता पाने की। पर हाय राम! यह क्या?

मदद की जगह वे लोग तो लूटने और घायलों का सामान बटोरने में लग गए। घड़ी, मोबाइल, पर्स, अंगूठी सब कुछ। दूर खड़ी मानवता यह सब देखकर शर्मसार होती रही। रोती सिसकती रही। ना जाने, यह सिलसिला कब तक चलता रहेगा।

आइए, इंसानियत के इस रिश्ते को दोबारा जीवित करें, ताकि हम सभी बिना भय और आतंक के जी सके, दूसरों की तरफ निस्वार्थ सहायता का हाथ बढ़ा सकें और इस धरती को प्यारा बना सकें।

रिया गुरुंग  
बारहवीं ब





## स्वावलंबी

एक बार की बात है दो दोस्त थे, रोहन और सोहन वे बहुत अच्छे दोस्त थे। रोहन समृद्ध था और उनके घर में सुख संपत्ति थी। पर सोहन एक आम आदमी था। एक बार सोहन अपने माता-पिता के साथ रोहन के घर पर मिलने गया। उसका घर बहुत बड़ा था, और उसके पास सात नौकर थे। जो हर पल उसका काम कर रहे थे। जब उसके सेवक खाना बना रहे थे, तो उन्होंने खाने में नमक कम डाल दिया। जब रोहन को खाने में नमक कम लगा तो वह खुद उठा और उसने खुद नमक ठीक किया। फिर उन्होंने दिन का खाना एक साथ खाया और सोहन अपने माता-पिता के साथ घर चला गया। कुछ दिनों बाद रोहन, सोहन को घर बुलाने के लिए आया तो उसने देखा कि उनका घर बहुत ही छोटा है, जब वो अंदर गया और उसने सोहन को देखा तो उसने कहा, 'अरे सोहन! तुम्हारे पास सेवक नहीं है क्या?' फिर सोहन ने थोड़ी देर सोचा और बोला, 'हैं ना, पूरे आठ हैं।' तो रोहन थोड़ा अचंभित हुआ और बोला, 'तो तुम्हारे सेवक कहाँ हैं?' तो सोहन ने बोला, 'अरे ये देखो ना दो पैर, दो हाथ, दो आंख, और दो कान, इस बात को सुनकर रोहन बोला, 'अरे, ये क्या मज़ाक है', तब सोहन बोला 'अरे हां हां मैं सच बोल रहा हूँ, याद है जब मैं तुम्हारे घर पर आया था और खाने में नमक कम हो गया था, तो तुमने अपने हाथों से खुद ठीक किया था, जिसके ये अंग ठीक से काम कर रहे हैं वह ही सबसे धनवान है।

इसलिए कहते हैं-

**"अपना हाथ जगन्नाथ।"**

**काव्यांश तिवारी**

**कक्षा 7 ब**





Devarya Tal Lake



# लघु नाटिका पानी का महत्व

पात्र : पूरन , सावित्री, राहुल, कथावाचक

कथावाचक- आइए आज हम आपको मिलते हैं पूरन से

-सावित्री : पूरन

पूरन: हाँ मम्मी! सावित्री बेटा आज मंगलवार है, आज तुम्हे पूजा करनी है इसलिए नहा लो।

पूरन: अरे नहीं मुझे आज नहीं नहाना है क्या करूँ? क्या करूँ? एक काम करता हूँ नहाने के बहाने स्नानगृह में जाकर पानी से भरी बाल्टी को ही गिराकर और अपने हाथ मुँह को धो कर बाहर आ जाता हूँ। हाँ यह ठीक रहेगा।

-कथावाचक: अगले दिन वह स्कूल अपने दोस्तों को यह तरकीब बताकर बहुत खुश हो रहा था तभी उसका मित्र राहुल उसके पास आया और बोला

राहुल -यह कोई तरकीब नहीं पानी की बर्बादी है। जो पानी तुमने बर्बाद किया उससे कितने प्यासों कि प्यास मिटाई जा सकती थी।

पूरन - तुम खुद को ज्यादा ही महान समझते हो। एक बाल्टी पानी से क्या फर्क पड़ जाएगा।

कथावाचक -ऐसा कहते हुवे राहुल को धक्का मारते हुवे वह आगे बढ़ गया। -

(अगले दिन।)

-सावित्री: पूरन नहा लो। आज स्कूल जाना है।

-पूरन - अरे नहीं!

-कथावाचक: पूरन ने सोचा मैं कल भी नहीं नहाया था। और आज भी मैं नहाना नहीं चाहता क्यों न वही तरकीब अपनायी जाए लेकिन इस बार एक बाल्टी पानी की बजाय दस-बारह बाल्टी पानी गिराकर आता हूँ, और मम्मी को शक भी नहीं होगा।

-पूरन: मम्मी मैं नहा लेता हूँ।

-कथावाचक: (जैसे ही पूरन ने तरकीब अपनायी तो अचानक से पानी का आना बंद हो गया और उसकी मम्मी परेशान हो गयी फिर आगे क्या होता है देखते हैं)

-पूरन: मम्मी!

-मम्मी: हाँ बेटा?

-पूरन : मुझे प्यास लगी है पानी चाहिए।

-मम्मी: तुम पानी नहीं पी सकते हो।

-पूरन: क्यों मम्मी?

-मम्मी: बेटा अचानक से पानी का आना बंद हो चुका है और कहीं भी और किसी भी नल में पानी नहीं है। थोड़ा सा पानी बचा था उससे खाना बना लिया। लो खाने की थाली और खाना खा लो।

-पूरन: ठीक है मम्मी।

-कथावाचक: पूरन खाना खा रहा था पर उसकी प्यास बढ़ती जा रही थी, अब उसे अपने मित्र राहुल की बात याद आ रही थी कि पानी कितना महत्वपूर्ण है। आज उसे एक गिलास पानी कि कीमत पता चल रही थी।

अगले दिन उसने अपने दोस्त से माफ़ी माँगी और उसे बहुत पश्चाताप हो रहा था।

उस दिन पूरन ने निश्चय किया की न तो वह पानी बर्बाद करेगा और ना

औरों को करने देगा। वह जान चुका था कि पानी के बिना जीवन संभव नहीं है।

(कभी भी पानी का दुरुपयोग न करें। पानी अनमोल है, जल है तो जीवन है।)

कार्तिकेय आर्या

आठवीं 'अ'

# माँ

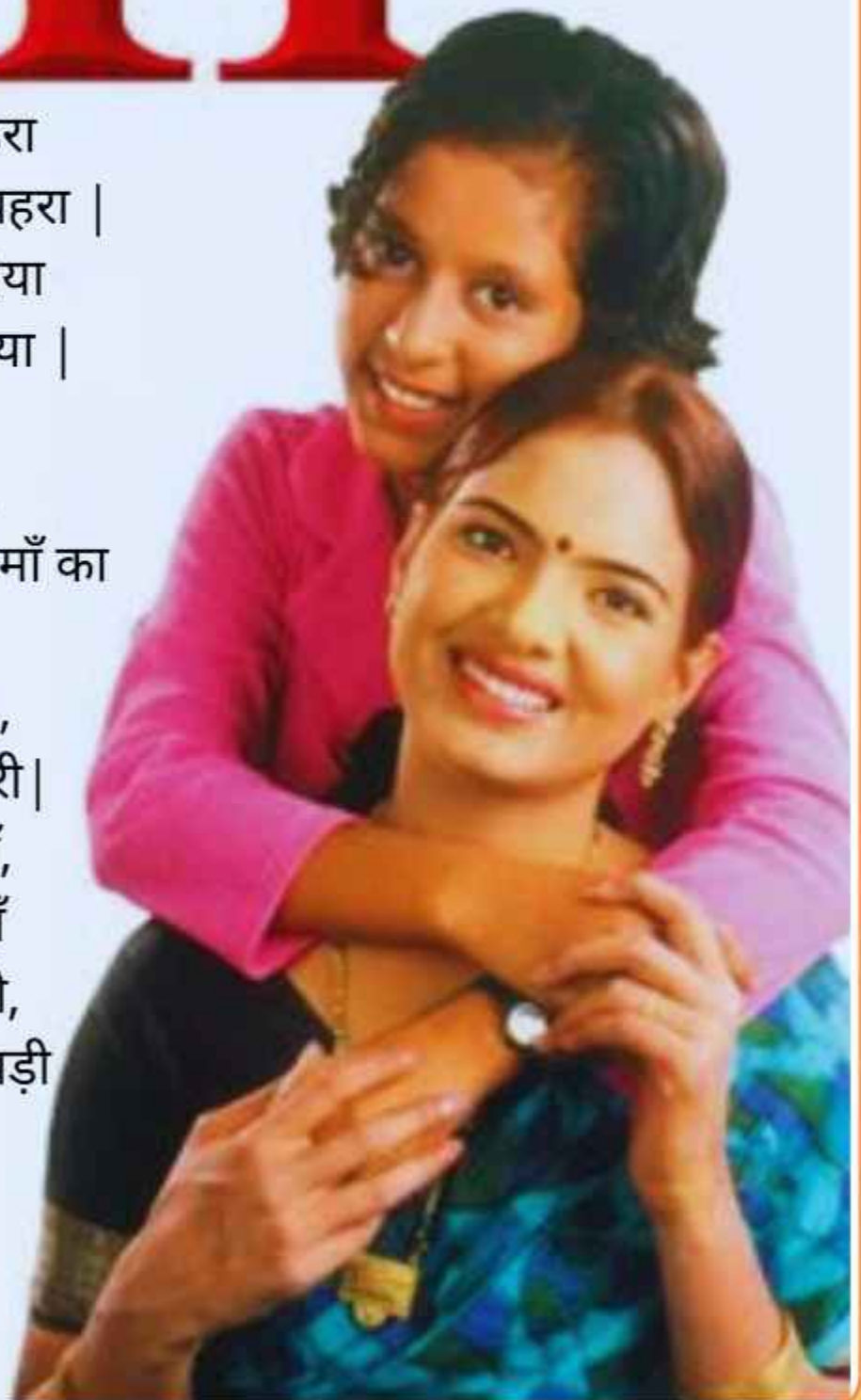
माँ तुम्हारा प्यार बेहद गहरा  
जो दिल कि गहराई में देता पहरा ।

माँ तुमने ही तो जीवन दिया  
मुझे पाला -पोसा, बड़ा किया ।

हर दर्द को सहकर  
इस दुनिया में बुलाया,  
हर आँसू को पोछने के लिए माँ का  
प्यार आया ।

माँ है मेरी सबसे प्यारी ,  
खुशियों की है वो फुलवारी ।  
चलना हमें सिखाती माँ,  
मंजिल हमें दिखाती माँ  
सबसे सुंदर सबसे प्यारी,  
माँ है मेरी भोली - भाली, बड़ी  
निराली ।

**कल्पना  
पाँचवी 'ब'**





## विकसित भारत

विकसित भारत का सपना, साकार हो हर बार,  
संघर्ष और मेहनत से बढ़े यह हिम्मत और प्यार।  
नई ऊँचाइयों को छूने, नव विचारों का हो बल,  
शक्ति से परिपूर्ण हो, हर एक भारतीय जन।  
हर गांव, हर शहर में, हो विकास की रफ़्तार,  
शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार से, चमके यह संसार।  
संगठित हो राष्ट्र हमारा, एकता में हो विश्वास,  
प्रगति की राह पर बढ़ते, हम सभी का हो साथ।  
आत्मनिर्भर बने हम, हर क्षेत्र में हो कामयाबी,  
सभी का हो उज्ज्वल भविष्य, हम सब बनें अनुरागी।  
समाज में समरसता हो, हर नागरिक का अधिकार,  
विकसित भारत की यह यात्रा, करे हर दिल स्वीकार।

**शिक्षा थपलियाल**

**नौवीं ब**





# अच्छा मेहनती मनुष्य बनना होगा

क्या हुआ ? यदि तू हारा बार-बार,  
क्या हुआ? यदि मुश्किलें आई हज़ार  
तू बस हौसला रख संग,  
एक अच्छा, मेहनती मनुष्य बन।

तू अपने हिस्से की कोशिश करते जा,  
कछुए की ही तरह सही,  
तू मेहनत से आगे बढ़ते जा,  
एक अच्छा, मेहनती मनुष्य बनते जा।

तेरे साथ वह परम शक्ति,  
तेरे साथ मात-पिता गुरु,  
लोगों की चिंता तू छोड़,  
बस कर तू अपना कर्म शुरू।

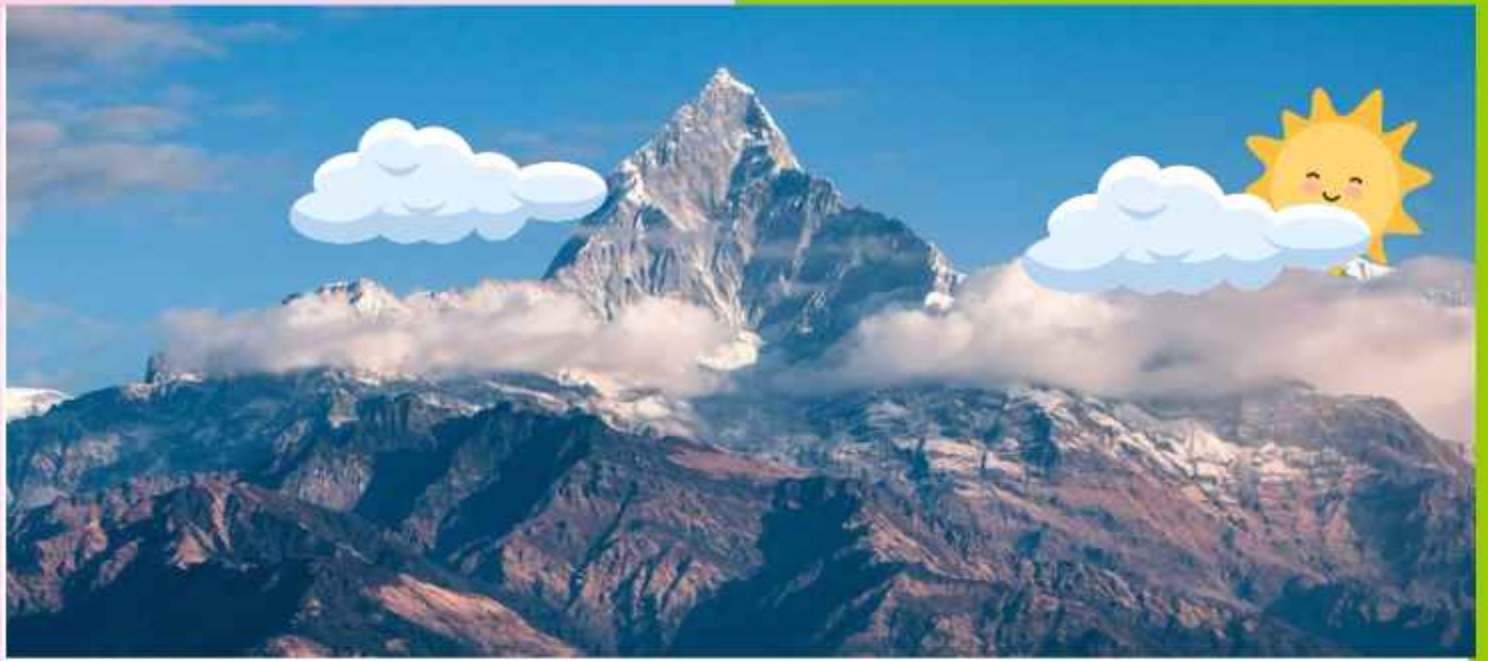
मन को इतना दृढ़ बनाना होगा,  
कुछ ऐसा कर दिखाना होगा,  
कि इतने काबिल हम बन जाएँ,  
कि किसी के काम हम आएँ।

भले असफलताएं मिले हज़ार,  
भले चुनौतियां आएं बार-बार,  
हमें फिर से खड़ा उठना होगा,  
एक अच्छा, मेहनती मनुष्य बनना होगा।

प्रियंका  
11वीं 'स'







## पहाड़ का गीत

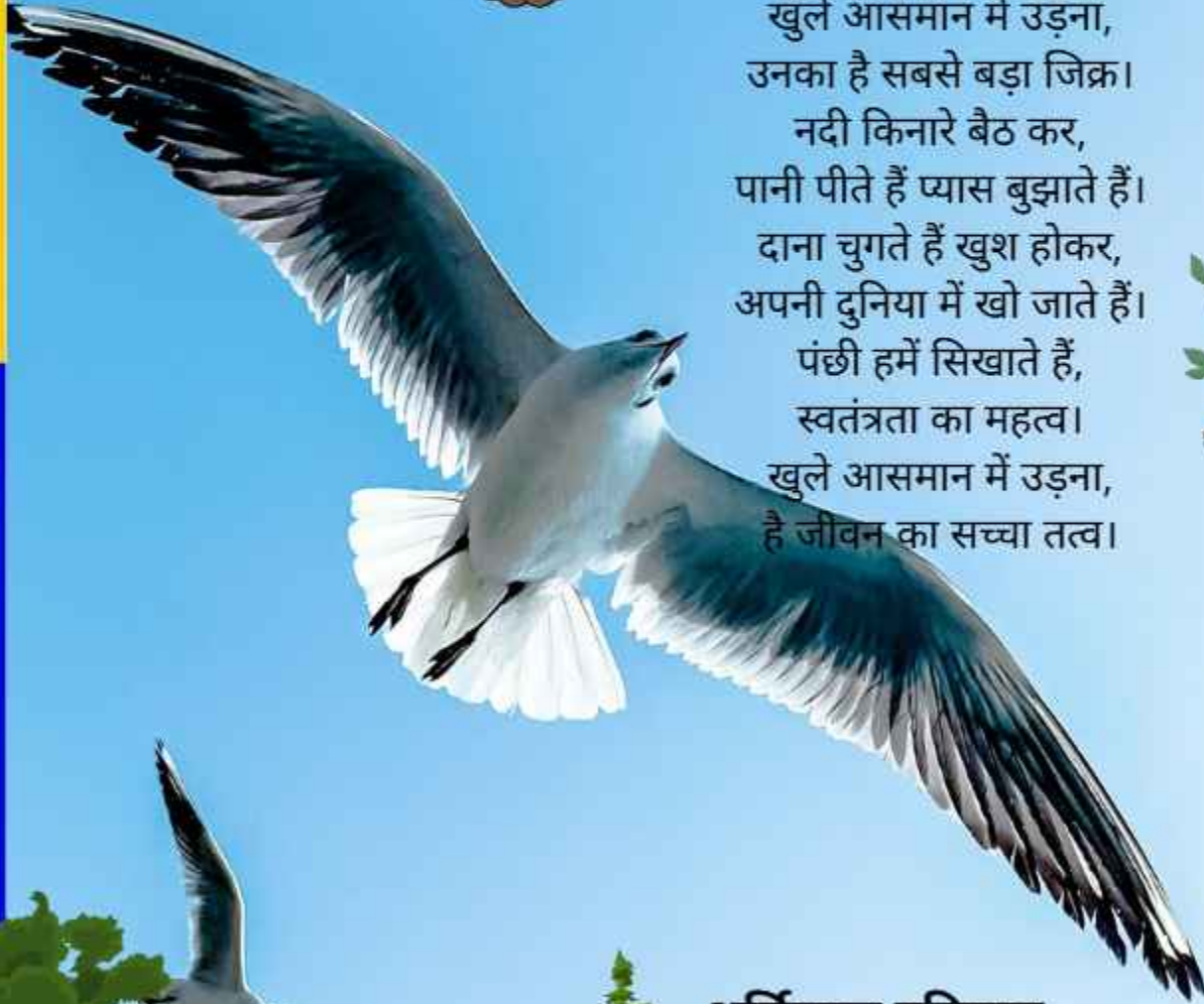
ऊँचे-ऊँचे पर्वत देखो,  
बादल छूते इनको देखो।  
हरी-भरी हैं वादियाँ,  
झर-झर बहती नदियाँ  
सूरज की किरणें जब पड़तीं,  
चोटी सोने सी तब दिखतीं।  
ठंडी-ठंडी हवाएँ चलतीं,  
मन में खुशियाँ ये भरतीं।  
पेड़ों की छाया है प्यारी,  
पक्षियों की चहचहाहट न्यारी।  
प्रकृति का ये सुंदर नज़ारा,  
मन को भाता है ये सारा।  
पहाड़ों पर जब हम जाते,  
नई ऊर्जा हम पाते।  
प्रकृति का ये अनुपम रूप,  
देता है हमको नयी धूप।



यशस्विनी उनियाल  
सातवीं ब

# पंछी

आसमान में उड़ते पंछी,  
कितने सुंदर, कितने सच्चे।  
रंग-बिरंगे पंखों वाले,  
मन को मोहने वाले बच्चे।  
सुबह-सुबह चहचहाते हैं,  
मधुर गीत सुनाते हैं।  
पेड़ों पर घर बनाते हैं,  
प्यार से रहते-सहते हैं।  
कभी यहाँ, कभी वहाँ,  
उड़ते जाते हैं बेफिक्र।  
खुले आसमान में उड़ना,  
उनका है सबसे बड़ा जिक्र।  
नदी किनारे बैठ कर,  
पानी पीते हैं प्यास बुझाते हैं।  
दाना चुगते हैं खुश होकर,  
अपनी दुनिया में खो जाते हैं।  
पंछी हमें सिखाते हैं,  
स्वतंत्रता का महत्व।  
खुले आसमान में उड़ना,  
है जीवन का सच्चा तत्व।



अर्चिष्मान उनियाल

4 ब



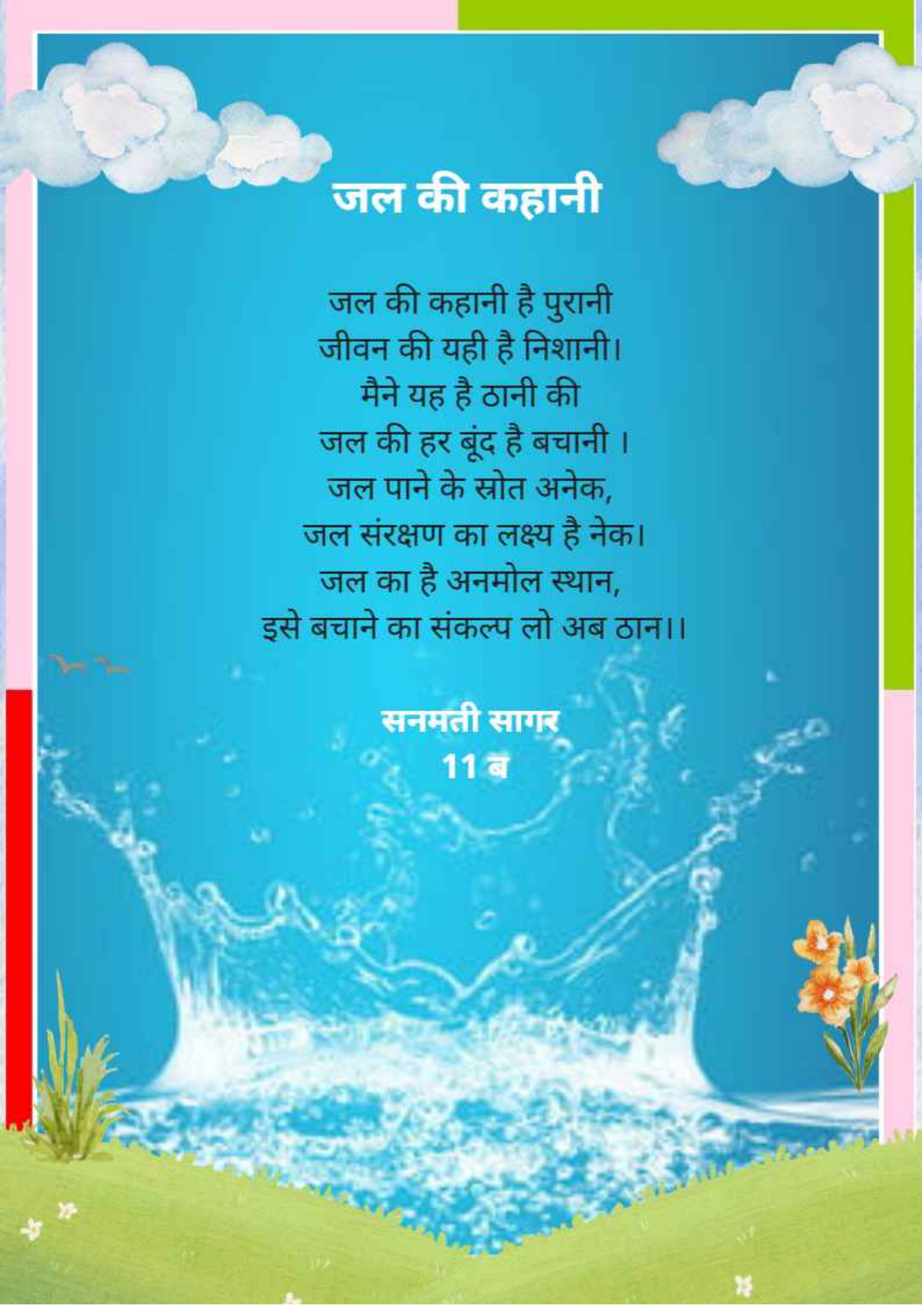


# जल की कहानी

जल की कहानी है पुरानी  
जीवन की यही है निशानी।  
मैने यह है ठानी की  
जल की हर बूंद है बचानी ।  
जल पाने के स्रोत अनेक,  
जल संरक्षण का लक्ष्य है नेक।  
जल का है अनमोल स्थान,  
इसे बचाने का संकल्प लो अब ठान॥

सनमती सागर

11 ब



# हमारा विद्यालय

हमारा विद्यालय स्वर्ग से सुंदर  
अध्यापक ईश्वर समान  
बच्चे भी है मन से पढ़ते  
दोनों में है अद्भुत ज्ञान ।

सुबह - सुबह जब बच्चे आते  
शांत मन से प्रार्थना गाते  
ईश्वर स्वयं प्रसन्न हो जाते  
हर मनोकामना पूरी कर जाते ।

आदर व अनुशासन रखते  
कभी किसी से बैर न करते  
हंसी- मज़ाक सब साथ में करते  
हर विषय को मन से पढ़ते ।

खेल-कूद कालांश जब आता  
सबका मन प्रसन्न हो जाता  
हर कोई इसमें अक्ल आता  
पुरस्कार सम्मान है पाता ।

विद्यालय में रहना हमें बहुत भाता  
यहाँ हर सपना साकार हो जाता ।  
प्रगति के पथ पर आगे बढ़ता जाता ।  
हर बच्चा अपना लक्ष्य पाता ।

शौर्य कुमार मिश्रा  
कक्षा - ११ 'बी'





# जीवन में खेलों का महत्व

आज के भाग दौड़ और व्यस्तता के जीवन में यदि खेलकूद और व्यायाम की बात की जाती है तो इसे समयाभाव का बहाना बनाकर टाल दिया जाता है। जबकि स्वस्थ जीवन के लिए यह नितांत आवश्यक है।

यह बिल्कुल सच है कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन-मस्तिष्क बसता है और यही जीवन में सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में सहायक होता है। इसलिए खेलों के लिए समय निकालना और उत्साह से भाग लेना आवश्यक है। खेल या व्यायाम से मनोरंजन के साथ ही मनुष्य का मन व चित्त चिन्तामुक्त होता है, जीवन के प्रति सकारात्मक व उत्साहपूर्ण नजरिया विकसित होता है। खेल से जीवन में सकारात्मकता, साहस, दृढ़ इच्छाशक्ति, आत्मविश्वास, चातुर्य, नई ऊर्जा का जन्म होता है। यह एक अलग अदभुत अहसास दिलाता है। यह बिल्कुल सच है कि जीवन भी एक खेल ही है। जीवन के अलग-अलग पड़ावों पर आपको खेल से जुड़े हुए रहने से भी शक्ति व ऊर्जा प्राप्त होती है।

व्यक्तिगत जीवन के अतिरिक्त राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी खेलों का बहुत बड़ा महत्व है। इससे सद्भावना व मैत्री भाव को बढ़ावा मिलता है।

खेलों से अनुशासन में रहना सीखने को मिलता है। एकाग्रता, धैर्य, परिस्थितियों के अनुसार कार्यशैली में परिवर्तन आदि गुणों से व्यक्तिगत जीवन में व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्माण होता है और खेलों से यह सब कुछ व्यक्ति अपने आप ही सीख जाता है। खेल भावना अर्थात् हार जीत की परवाह न कर हमेशा लक्ष्य प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील रहना और जीवन में सफल होने के लिए इस भावना का सदैव पालन व सम्मान करना चाहिए। यह सब हमें खेलों के माध्यम से ही सीखने को मिलता है, इसलिए जीवन में खेलों के महत्व को समझना आवश्यक है।

**अनिल मैन्दोली**  
अभिभावक  
(अवन्तिका मैन्दोली)  
(कक्षा 10 अ)



# संस्कृत अनुभाग





श्रीसद्गुरुदेवाय नमः

**आदर्शजीवनाय संस्कृत-सूक्तयः  
(आदर्श जीवन के लिए संस्कृत सूक्तियां)**



जालानुगुणं परिवर्तनमेव युक्तम्। परन्तु परिवर्तनं पूर्वापरपक्षयोः मध्ये सामञ्जस्यं भवात्, न केवलं एकस्य पक्षस्य उद्धातनम्। अधुना मनुष्यः स्वार्थकारणेन परिवर्तनस्य परिभाषां परिवर्तयति। वर्तमानकालः यत्र मनुष्यः कर्मणा दानवः अभवत्। इदं प्रतीयते यत् भ्रष्टाचारः, दुराचारः, चौर्यम् अनुशासनहीनता इत्यादयः दुष्टाः प्रवृत्तयः प्रतिगृहं स्थानं नीतवन्तः। अस्मिन् महार्घताकाले अस्माकं मूल्यानि एव अस्मान् रक्षितुं शक्नोति | केवलं अस्माकं परम्पराः, अस्माकं रीतयः, अस्माकं संस्कृतिः च मानवतां रक्षितुं शक्नुवन्ति।

अस्यां परिस्थितौ अस्माकं संस्कृतभाषायाः अध्ययनम् आवश्यकम्। या भाषा दिव्या। या भाषा सर्वथा वैज्ञानिका अस्ति। सा भाषा या अस्मान् सम्मानं, संस्कृतिः, अनुशासनं, गौरवम् च प्रददाति। यतो हि अस्याम् अस्माकं सम्पूर्णा संस्कृतिः समाहिता अस्ति।

अत एव कश्चन् वदति-...

"भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे संस्कृतं संस्कृतिस्तथा"।

अतः वर्तमानकाले मानवानाम् आधुनिकतया सह पारम्पर्यानुसरणमपि आवश्यकम्। येन मानवता संरक्षेत्। संस्कृतस्य केचन महत्त्वपूर्णाः उद्धरणानि ज्ञातव्याः ये अस्मान् सदैव अभ्युदयाय प्रेरयन्ति -

। अति तृष्णा विनाशाय।

अर्थ : अधिक लालच नाश कराती है।

। अति सर्वत्र वर्जयेत्।

अर्थ : अति (को करने) से सब जगह बचना चाहिये।

। 'अतिथि देवो भव'

अर्थ : अतिथि देव स्वरूप होता है।

। अतिभक्ति चोरलक्षणम्।

अर्थ : अति-भक्ति चोर का लक्षण है।

। 'अतिस्नेहः पापशंकी'।

अर्थ : अत्यधिक प्रेम पाप की आशंका उत्पन्न करता है।

। अतिविचारः श्रुत्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः।

अर्थ : अत्यधिक सोचने वाला और सुनने वाला दुर्लभ है।

। अतिचिन्तनं लघुचेतसाम्, उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।

अर्थ : अत्यधिक चिन्तना लघुचेतसाम्, उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।

। अतिचिन्तनं तुम्हारा हैं। ऐसा चिन्तन तो संकीर्ण बुद्धि वालों का हैं। उदार चरित वालों के

। अतिचिन्तनं तुम्हारा हैं। ऐसा चिन्तन तो संकीर्ण बुद्धि वालों का हैं। उदार चरित वालों के

उपेन्द्रप्रसादः

(संस्कृतशिक्षकः)

## जीवने गुरोः मार्गदर्शनम्

उत्तानपादः भक्तस्य पिता आसीत् । उत्तानपदस्य राज्ञी आसीत् । एका सुनीतिः अपरा सुरुचिः च । ध्रुवः सुनीतेः पुत्रः आसीत् । यदा ध्रुवः पञ्चवर्षीयः आसीत् तदा एकस्मिन् दिने तस्य सौतेयमाता सुरुचिः तस्मै अवदत् यत् यदि त्वं पितुः अङ्के उपविष्टुं इच्छसि तर्हि मम गर्भात् वा जन्म कुरु वा ईश्वरं प्राप्य मां कथयतु । तदनन्तरं ध्रुवः चिन्तितवान् यत् इदानीं ईश्वरं प्राप्य एव पुनः आगमिष्यामि इति । ध्रुवः एकाकी एव वनं प्रति प्रस्थितवान् । मार्गे तस्य मनसि मातुः कथनं परिभ्रमन्ति स्म । सः चिन्तयति स्म यत् - मातुः उक्तं कथं साधयिष्यामि इति । तस्मिन् एव काले सः नारदमुनिं मिलितवान् । नारदः पञ्चवर्षीयं लघुबालकं वने एकान्ते भ्रमन्तं दृष्टवान् । कारणं पृष्टवान् । ध्रुवः अवदत्, 'अहं ईश्वरं प्राप्तुम् इच्छामि । नारदः उक्तवान् वत्स ! भगन्तं प्राप्तुं तु कठिनं तपं करणीयं भवति । नारदः तत्र स्थित्वा चिन्तितवान् यत् एतत् सर्वं श्रुत्वा बालकः स्वगृहं प्रति आगमिष्यति, परन्तु ध्रुवः तं श्रुत्वा तस्मै अवदत्, - महर्षिः अन्यदपि मार्गमस्ति वा न ? किं कोऽपि सम्यक् मार्गः अस्ति ? अस्य बालस्य दृढनिश्चयः दृढः इति नारदः अवगच्छत् । अथ नारदः गुरुः भूत्वा ध्रुवाय मन्त्रं न्यवेदयत् । "ॐ नमो भगवते वासुदेवाय" इति । इत्थम् अनेन ध्रुवस्य लक्ष्यपूर्तिः संपन्ना जाता । अत एव जीवने गुरोः मार्गदर्शनम् अत्यन्तावश्यकम् ।



अनुश्री  
VI A







## अस्माकं पृथिवी

सौभाग्यम् अस्ति यत् पृथिवी जलीयः ग्रहः वर्तते जलं सौरमण्डले दुर्लभं वर्तते । अन्यत्र कुत्रापि जलं नास्ति पृथिव्यां जलं पर्याप्तम् अस्ति अतः पृथिवी नीलग्रहः इति उच्यते । जलं निरन्तरं स्वरूपं परिवर्तते । सूर्यस्य तपित्तवाष्पस्वरूपं, शीतले सति सङ्घनीकरणे मेघस्वरूपं, वर्षामाध्यमेन जलस्वरूपं धरति । जलं महासागरषु वायुमण्डले, पृथिव्यां च परिभ्रमति । जलस्य तत्परिभ्रमणं जलचक्रं कथ्यते । अस्माकं पृथिवी स्थलशाला इव अस्ति । अलवणस्य जलस्य मुख्यः स्रोतः नदी, तडागाः, हिमनदी च वर्तते । महासागराणां, समुद्राणां च जलं लावण्यं वर्तते तस्मिन् जले सोडियम्

क्लोराइड, पाचकलवणं च प्राप्यते ।

अतः एव पृथिव्याः संरक्षणम् अस्माकं कर्तव्यम् ।

नाम श्लोक निषाद  
कक्षा- सप्तमी 'अ'





## अस्माकं विद्यालयः

विद्यालयः एकं महत्वपूर्णं स्थानम् अस्ति, यत्र बालाः शिक्षां प्राप्तुम् व्यक्तित्वविकासयन्ति । विद्यालये पाठ्यपुस्तकानि कला, विज्ञानं, गणितं, शारीरिकशिक्षां च पठन्ति । शिक्षकाः बालकान् जीवनस्य महत्वपूर्णानिमूल्यानि शिक्षयन्ति । विद्यालये बालाः सामूहिककार्यक्रमेषु खेलक्रीडायाम् तथा सांस्कृतिकप्रतियोगितायां अपि भागम् अनुगृह्णन्ति । विद्यालये शिक्षायाः माध्यमेन बालाः न केवलं बौद्धिकज्ञानम् अपि तु सामाजिकज्ञानम् अपि प्राप्नुवन्ति । विद्यालये छात्राः समर्पणेन परिश्रमेण च स्वीयं लक्ष्यं प्राप्नुवन्ति । अतः विद्यालयः जीवनस्य आधारभूत-स्थानं भवति ।

मही खन्ना

6अ



SCHOOL



# विद्यालयस्य महत्वम्

विद्यालयः ज्ञानस्यमन्दिरम् अस्ति । अत्र छात्राः न केवलं पाठ्यवस्तूनि अपितु नैतिकमूल्यानामपिशिक्षां प्राप्नुवन्ति। विद्या जीवनस्य दीपः अस्ति यः अज्ञानरूपम अंधकार निवारयति।

विद्यालये शिक्षकाः आदर्शरूपेण कार्यं कुर्वन्ति, ते छात्रान अनुशासनं, मित्रता, परिश्रम च शिक्षयन्ति यत्र अस्ति, तत्र समाजः उन्नतिं प्राप्नोति। यत्र शिक्षायाः आदरः अस्ति, तत्र समाजः उन्नतिं प्राप्नोति।

आधुनिके समये विद्यालयाः केवलं पुस्तकपाठने न सीमिताः। अत्र खेलक्रीडा संगीतं, कला च अपि प्रोत्साहितानि भवन्ति, बालकानां सर्वांगीणं विकासं कुर्वन्ति।

तस्मात्, अस्माभिः विद्यालये नित्यं गत्वा शिक्षायाः लाभं कर्तुं प्रयत्नः करणीयः। विद्या जीवनस्य सर्वश्रेष्ठं धनं इति च सदा स्मर्तव्यम् ।

आरव रावत  
कक्षा - सप्तमी (ब)



# विद्यायाः महत्त्वम्

विद्या इत्यस्य अर्थः 'ज्ञानम्' अथवा 'शिक्षा' इति । संस्कृतशब्दः यस्य अर्थः 'ज्ञातव्यम्' अथवा 'शिक्षितुं' इति । विद्या इति व्यापकं पदं ज्ञानं, शिक्षणं, अनुभवं, अवगमनं, चिन्तनं च सम्बद्धानां सर्वेषां गुणानाम् अभिप्रायं ज्ञापयितुं प्रयुक्तम् अस्ति ।

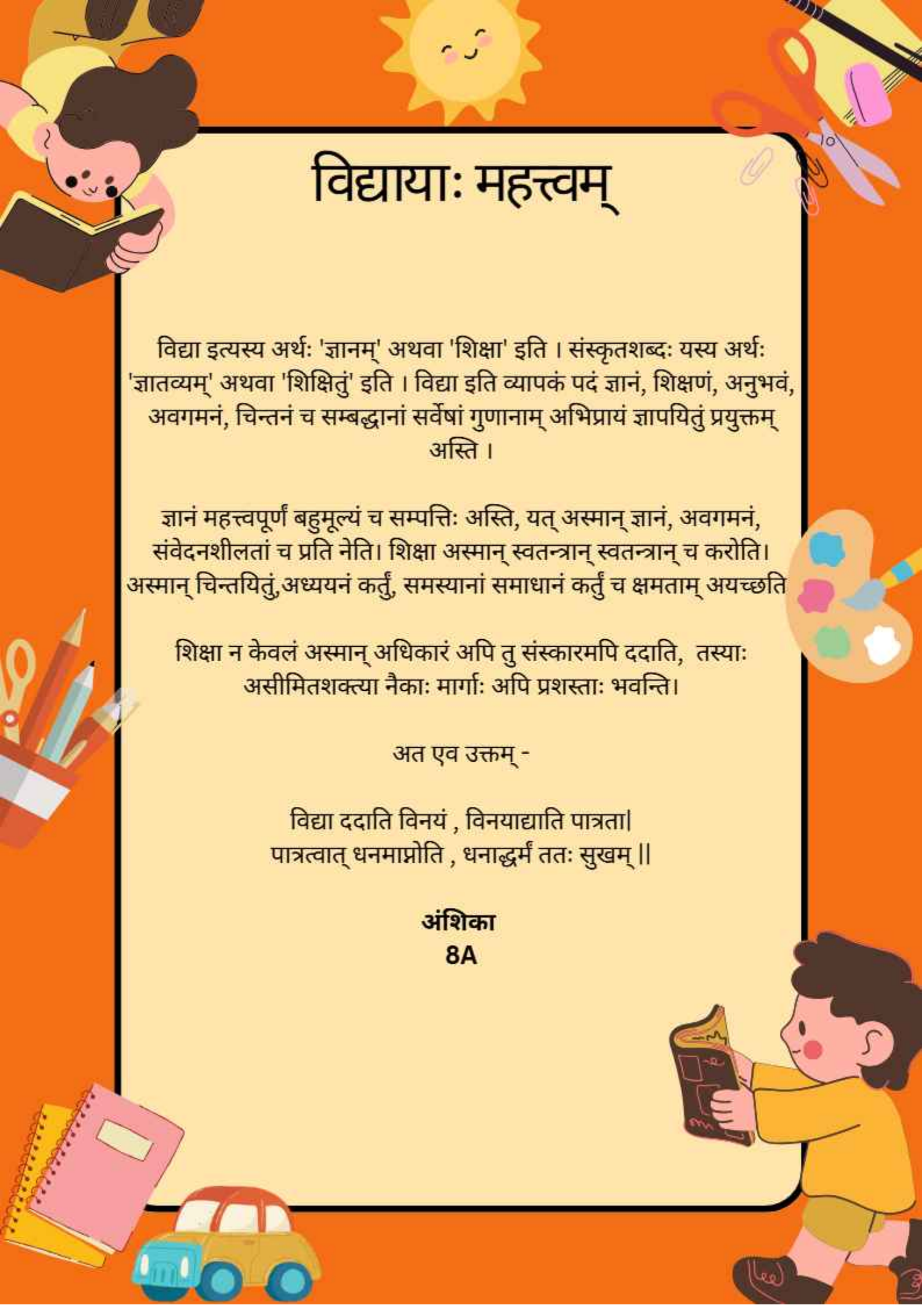
ज्ञानं महत्त्वपूर्णं बहुमूल्यं च सम्पत्तिः अस्ति, यत् अस्मान् ज्ञानं, अवगमनं, संवेदनशीलतां च प्रति नेति । शिक्षा अस्मान् स्वतन्त्रान् स्वतन्त्रान् च करोति । अस्मान् चिन्तयितुं, अध्ययनं कर्तुं, समस्यानां समाधानं कर्तुं च क्षमताम् अयच्छति ।

शिक्षा न केवलं अस्मान् अधिकारं अपि तु संस्कारमपि ददाति, तस्याः असीमितशक्त्या नैकाः मार्गाः अपि प्रशस्ताः भवन्ति ।

अत एव उक्तम् -

विद्या ददाति विनयं , विनयाद्याति पात्रता।  
पात्रत्वात् धनमाप्नोति , धनाद्धर्मं ततः सुखम् ॥

अंशिका  
8A





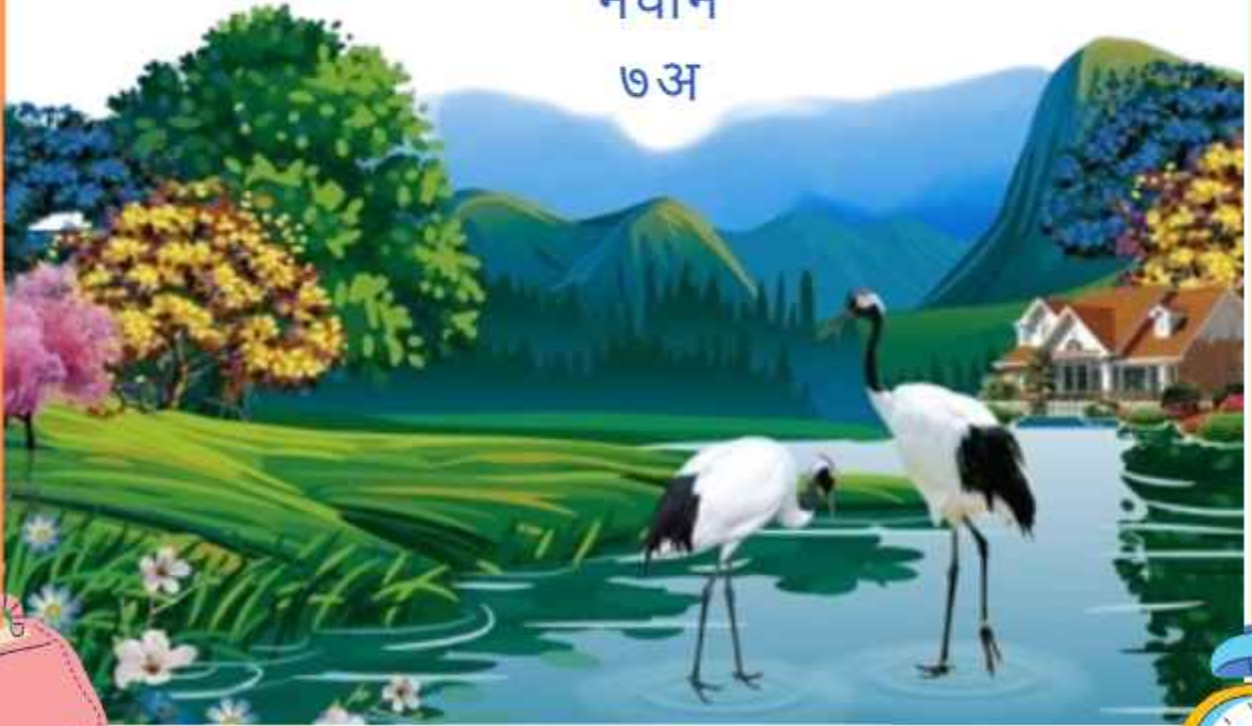


# प्रकृतिः

प्रकृतिः माता सर्वेषाम्  
बहूनाम् अपि फलानाम्  
बहूनाम् अस्ति वृक्षाणाम्  
पुष्पाणां चापि मातेयम्  
भ्रमराणां, पशूनां,  
पक्षीणां च मालास्ति  
जनेभ्यः जीवनं सदा  
ददाति प्रकृतिः माता ।।

नवीन

७अ





# English Section





## THE ARTFUL STROKE

Madhubani art (also known as Mithila art) is a style of painting practiced in the Mithila region of India and Nepal. It is named after the Madhubani district of Bihar, India, which is where it originated. Jitwarpur, Ranti and Rasidpur are the three most notable cities associated with the tradition and evolution of Madhubani art. The art was traditionally practiced by female members.

Artists create these paintings using a variety of mediums, including their own fingers, or twigs, brushes, nib-pens, and matchsticks. The paint is created using natural dyes and pigments such as ochre and lampblack are used for reddish brown and black respectively. The paintings are characterized by their eye-catching geometrical patterns. There is ritual content for particular occasions, such as birth or marriage, and festivals, such as Holi, Surya Shasti, Kali Puja, Upanayana, and Durga Puja.

Vedanshi  
XII C





## **Aipan (Kumaoni : Ēpaṇ)**

Aipan (Kumaoni: Ēpaṇ) is an established-ritualistic folk art originating from Kumaon in the Indian Himalayas. The art is done mainly during special occasions, household ceremonies and rituals. Practitioners believe that it invokes a divine power which brings about good fortune and deters evil. The art is special as it is done on empty walls, which are brick-red in colour, called Geru.

The actual art is done with a white paste made of rice flour.

The art is frequent to floors and walls of Puja rooms and entrances of homes. It is also practiced mostly by Kumaoni women. The art form has great social, cultural and religious importance.





# Artistic Sense

Artistic sense in human beings is natural or God gifted . This can be observed in all those routines and particular act and activities performed by him. Art is a natural way to express the ideas. There are many parts of arts to express their ideas or emotions. Visual art, performing art, literature and drawing are the processes through which a picture comes into existence by making lines on surface and a figure takes shape. Painting is like playing with colours. It is a process through which a colourful picture comes into existence. There are many parts of drawing in painting like landscape, natural, portrait you can make all of these by watercolor , acrylic color, pencils, oil pastel and oil colours etc. Art education plays a very important role in the upbringing of the child as by this ,they can be creative , focused and motivated. They can express their feelings and ideas by making paintings. I help them learn to show their talent which is often organised in Kendriya Vidyalaya like poster making, face painting, hand painting and many other forms by brushing up on their skills. I feel honoured to the KVS for giving me the opportunity to work as an ART teacher . I try my best to motivate the students to show their talent through various activities .It enhances their creativity and imagination that help them in other subjects too .

**NAMITA GAIROLA**  
**TGT ART EDUCATION**  
**PM SHRI KV OLF DEHRADUN**





# TRAVELOGUES

## TREKS AND TRAILS

### **Journey to the Queen of Hills: MUSSOORIE**

**Hello everyone,**

**I am Nidhi , let's take you to the beautiful place- Mussoorie.**

**Mussoorie ,the Queen of hill stations is quite a place to visit for a short trip. Mussoorie is a beautiful place for tourists and its beauty makes people settle down and not return to the crowded cities. When I visited Mussoorie, it was covered with snow which is often the reason people are attracted towards Mussoorie . There are several locations like Kempty falls ,Mussoorie lake ,Mall Road etc. which are the places must to visit in Mussoorie. These beautiful, peaceful and natural view welcome tourists all year round. Real fun in Mussoorie was the snowfall which could even transform a young man to a child. I visited Mussoorie In December and luckily I saw snowfall .It was my first time when I felt the snow on my body.It was quite cold ,but the winter sun shone above the clouds like a cosy embrace of warmth .It appeared that the city was covered with white salt which was one of the best sights one could have asked for! So, dive in and learn what Mussoorie in December has to offer you. At last I want to tell you that if you will not visit Mussoorie specially in December then you will miss all these beautiful sights.**

**Nidhi  
XB**





# A TRIP WITH MY FAMILY

Hey! I am Priyanshi and I live in a nuclear family. Last year, during Diwali my aunt and her husband visited our home to celebrate the festival with us. Our normal conversation led us to a decision, "How about we go on a small trip?" And Yes, "we went". We started our journey from Forest Research Institute (F.R.I), a historic tourist attraction which was constructed during early 20th century under colonial power in Dehradun, after independence it came under govt. of India. In recent times this institute still aspires many geographers to conduct researches. The visit was honestly fruitful and I really learnt a lot. Apart from this, the location was lush green and many species of trees and plants hold their unique significance which made this place more admirable, plus the architecture is really exceptional which was one of the few things that excited me here. After that we visited Buddha temple. A sacred place for Buddhists. The place's peacefulness and solitude is what that attracts most of the visitors to divert their mind from their busy schedules. Continuing further we arrived the d-dun, the most famous tourist destination "Robber's cave", me and all my family members enjoyed whole heartedly. Afterwards we headed to Sahastradhara, but down on one's luck all the activities were closed. But that didn't barricade us from exploring, our next halt was Mussoorie "Queen of hills". There we visited library, Mall Road, company garden, Nagtibba. Then we moved to Dhanolti and it was such a breath taking view, to be surrounded by mountains and beautiful water fall. To make the trip more memorable I started recording a dance video, later I was accompanied by my uncle. The next day we went to Rishikesh, it was so enchanting and eternal even words fall short to describe what I felt at that moment. Its peaceful ambience was something that touched my heart, to soak my twin feet in the holy water of Ganges. There I saw many people who were from abroad basically, most of them were meditating. To venture something thrilling my uncle and father indulged themselves in river rafting. To conclude our journey, we went to Haridwar, there we took a holy dip on Har Ki Paidi then we visited Mansa Devi temple. In the evening me and my family members were vibing through the Ganga aarti and then finally we headed back home. To be straight from the shoulder the trip became a role in my memory. When we reached home I was happy, excited and exhausted at the same time.



**Priyanshi Yadav**  
**Class- 8th A**





# MYSORE TRIP



Mysore , the royal city of Karnataka ,is renowned for its incredible beauty and historical significance .

We began our journey with a visit to Mysore palace , famous for its grandeur and intricate carvings .

Every corner of the palace reflected the essence of royal life .

Later , we visited a beautiful church . The peace and serenity of the place were truly calming . The colorful stained-glass window and exquisite architecture were mesmerizing .

Though the trip was short , it was memorable and heartwarming . Mysore left a deep impression on us with its history and tranquility.



Lucky  
VI A





# BUDDING POETS OF PM SHRI KV OLF



**Time is passing, tick by tick,  
Moments lost can never come back  
quick.**

**Let's make the most of every hour,  
And use our time with love and  
power.**



**Manya Gauniyal  
XI A**





# PROCRASTINATION



We hit the sack with a weary brain,  
Laziness wins, and tasks remain.

We confirm hope is not dead,  
We affirm there is tomorrow ahead.

Manya Gauniyal  
XI A





# WHISPERS OF SORROW

What is this feeling where my  
surrounding feels like hell,  
My sorrow is burning me too hard and  
producing everywhere a smell,  
Happiness and hopes are the working of  
fiction, they are all imaginary,  
These red eyes are my shining jewels,  
tears are my accessory,  
If you care for me, please do me a  
favour leave me alone, let me have  
some peace.  
Living away from the crowd is the way I  
can handle myself with ease

Sanchit

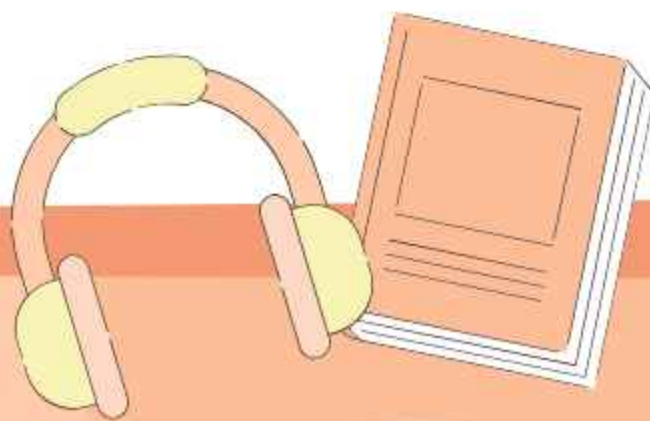
XI A



# THE POWER WITHIN

No matter how many times I fall, I will  
rise again,  
I will work desperately hard and leave  
no complain,  
I will put myself in that brutal fire to  
make me shine,  
I will not quit my journey until my  
destination is mine.

Sanchit  
XI A





# A STUDENT'S JOURNEY



A student's life is a journey so bright,  
A path of discovery, a future in sight.  
With books and teachers, we navigate the way,  
Learning and growing, day by day.  
The classroom is our stage, where we play,  
Where knowledge and dreams come alive each day.  
Our teachers guide us, with patience and care,  
Helping us find our strengths, and show us we can share.  
There are ups and downs, twists and turns,  
But we must persevere, and never learn to burn.  
For every failure is a lesson in disguise,  
A chance to learn, to grow, and to realize.  
Student's life is a journey, a path we must take,  
A journey of discovery, of learning, of making mistakes.  
But with each step forward, we grow more bold,  
Our dreams and aspirations, forever to be  
told.

Avika  
IX A



# EXAM

When I was going for an exam,  
I got stuck in a traffic jam.

When I entered the hall,  
I saw it was like a mall.





And when I saw the question paper,  
It blew me away like a newspaper.



But exam is a useful phase,  
Like an important case.

SIVA JOSHI  
VII B







# TREES ARE GOLD

Trees are supphire , trees are gold,  
Trees are friend , but not foe ,  
As we have been told .  
Trees exhale life , that we inhale ,  
As without oxygene ,life,goes pale.  
They watch us throughout the life ,  
To future generation, tell our tale.  
They are precious , stop chopping them,  
Extinction of them will bring mayhem.  
So, plant more, grow more ,  
Necessity of today, and future to restore.

**VAIDEHI**

(with the help of father  
Mr. BHUPINDER SINGH NEGI)

IX A



# AFFECTING A STRONG MIND

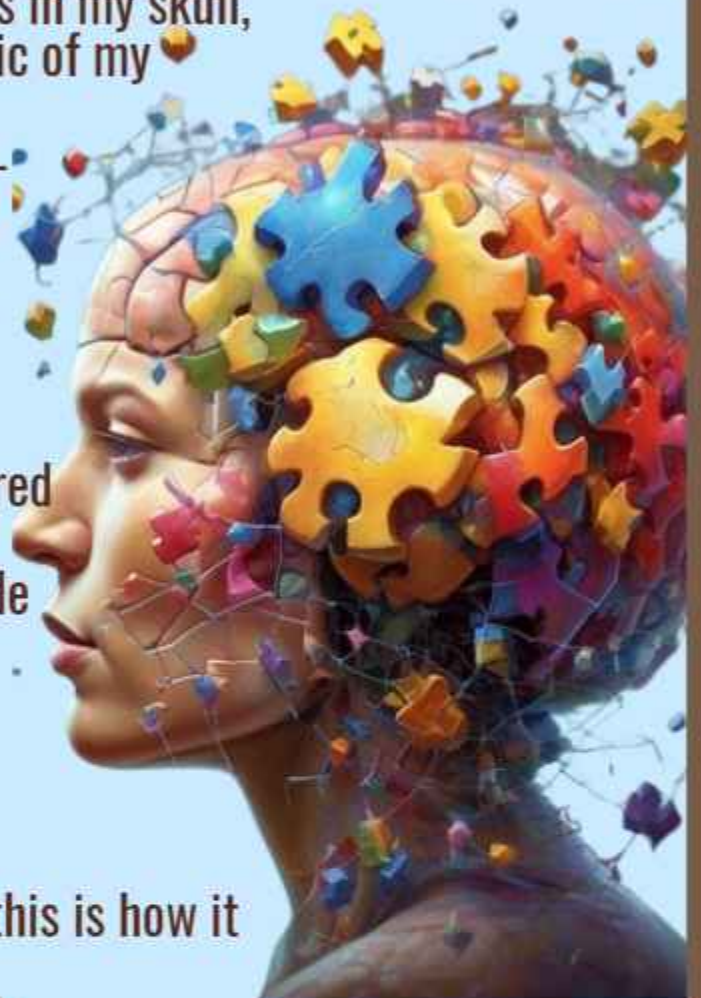
They articulate words- pastel and flowery at first,  
Like spring, or the scent of my favourite perfume.  
They expect their words to grow its roots in my skull,  
To tangle themselves into the fabric of my  
thoughts,  
But thoughts- ah, thoughts-  
are  
not  
so easily swayed.

See how thoughts move,  
Like the restless sea, of favoured  
waves and tragic tides.  
One cannot simply step inside  
and  
rearrange tides.

They say: listen.  
They say: believe.  
They say: this is truth, this is how it is, this is how it  
must be.  
But I simply watch their words,  
And observe like how a little paper boat on a wild and  
wide ocean,  
Sinks before it ever reaches the shore.

What is it then, to be affected?  
No- don't be broken down and get reshaped or undone,  
Remain unchanged  
Even the world drifts on.

Soumya  
XI C







# The Dreamer's Journey

A child with dreams so big, so bright,  
Works through the day, dreams  
through the night.

The path is lost, he doesn't know,  
Yet step by step, he learns to grow.

He stumbles, falls, but stands again,  
His heart keeps up through joy and  
pain.

Hoping that One day the world will  
see his flame. And proudly speak his  
shining name.



**SHAURYA PANT**  
**XI B**





# RIDDLES



1. I'm always in front of you but can't be seen. What am I ? Answer :- The Future
  2. I have hands but no arms, I have a face but no eyes. What am I ? Answer :- A clock
  3. I go up but never come down. What am I ? Answer :- Your age
  4. I'm tall when I am young and short when I'm old. What am I ? Answer :- Candle
  5. I come down but never go up. What am I ? Answer :- Rain
  6. What has an eye but cannot see ? Answer :- A needle
  7. I have no life, but I can die. What am I ? Answer:- A battery
  8. The more you use me, the sharper I get. What am I ? Answer:- Your brain ( or a pencil)
  9. I have no legs, but I can run, I have no voice, but I can roar. Answer:- A river
  10. I have no legs, but I can run, I have no voice, but I can roar. Answer:- A road
  11. The more you pull, the shorter I become. What am I ? Answer:- A rope
  12. The more I dry, the wetter I become. What am I ? Answer:- A towel
- 
- 







## Riddle Time

1. I am always there, yet I am hard to find, In the morning I am left behind.  
What am I?

Answer: Your shadow!

2. I have a voice, but I don't speak, I have a message, but I don't seek. What am I?

Answer: An echo!

3. I am a box that holds keys,  
But I am not a treasure chest, if you please. What am I?

Answer: A piano!

4. I am light as a feather, yet I can be heavy as stone, I can be calm or I can be  
thrown.

What am I?

Answer: Water!

5. I have a head, but never weep,  
I have a bed, but never sleep. What am I?

Answer: A river!

6. I have a foot on each side,  
But I am not an animal, I don't hide.

What am I ?

Answer: A compass!

7. I am always moving, yet I never roam,  
I am always changing, yet I stay at home.

What am I ?

Answer: The weather!

8. I have a voice that is loud and clear, But I am not a person, I don't have fear.

What am I? Answer: A bell!

9. I am a mystery that is hard to solve, I am a puzzle that is hard to unfold.  
What am I.

Answer: A riddle







## The Rhythm of My Soul: How Music Shaped My Life

Music—some may see it as just another form of entertainment, while others pay much attention to it. But for me, music is an endless ocean, deep and mysterious, where I am still searching for its seabed. It has taken me to places I never imagined, shaping me into the person I am today. Music is my teacher, my friend, my motivator—my everything. It calls out to me, urging me to dive deeper. Every time I put on my headphones, I leave the world behind and enter my own universe, a place where only melodies and harmonies exist.

Learning this art, however, was never easy. My journey with music began when I was in 4th standard, living in Shahjahanpur. It was the time of our annual function, and a choir group was being prepared for a performance. I had always dreamt of being a musician, but instead of being placed in the instrument section, I was assigned to the singing group. Though I loved singing, my heart yearned to understand the magic behind instruments. I was fascinated by how they worked, how they produced such beautiful sounds.

The school brought in a teacher to train selected students in playing the guitar for the event. I watched them in awe, desperate to learn, but when I asked the teacher how to play, he ignored me—perhaps thinking I was too young or incapable. Still, I participated in the choir, and our performance was fantastic. Yet, that experience only deepened my stubbornness to learn musical instruments.

I pleaded with my parents to buy me an instrument. After nearly a year of persistence, my wish was finally granted—I got my first guitar! It was from a brand called Intern, with six shining strings and a world of possibilities ahead. I played it daily, eager to master it. But one day, while tuning it, a string snapped in my hand. Panic rushed over me—I had no idea that broken strings were common, especially for beginners. Afraid of getting scolded, I hid my guitar away. Days passed, but I couldn't keep my secret for long. My father eventually found out and was upset. However, my elder brother, who had experience with guitars, came to the rescue and fixed it for me. That moment filled me with joy, and I picked myself up again, determined to learn properly.

Without a teacher, I turned to the internet and found an app called Yousician, which became my guide. It walked me through the basics, helping me understand my instrument in ways I never thought possible. By the time I reached 6th standard, I had moved to Dehradun, and things became easier. I saw the school choir group practicing daily and felt drawn to join them. However, the school had no guitar section, so I had to think of another instrument to play.

Harmonium and piano caught my attention since both were available in the school. With my guitar knowledge, I already understood musical notes, so I started observing a senior who played the harmonium. Slowly, I memorized the tunes for prayers, the National Anthem, and other songs. But simply remembering was not enough—I needed to play it properly. Once again, Yousician came to my aid, guiding me through the intricacies of these new instruments. Over time, I became proficient in both the guitar and harmonium. Learning the piano took longer because of its requirement for both-hand coordination, but I persevered.

By 7th standard, I had become a key part of the school's music group. My music teacher recognized my dedication and gave me more opportunities. Seeing my passion, my father enrolled me in music classes, which further refined my skills and strengthened my grip on various instruments. This was a turning point for me—I was no longer just a beginner. My confidence grew, and I started participating in multiple school events.

One of the biggest highlights of my journey came in November 2022. A month before Children's Day, our Principal announced that students could perform anything they wanted. Excited, I teamed up with two of my friends. One played the clap box, another the piano, and I played the guitar. We spent weeks preparing a medley of three songs. My pianist friend even came to my house to practice together, ensuring we were perfectly synchronized.

Then came the big day. Nervousness crept over me—I had never performed one of my own creations in front of such a large crowd. But as the performance began, I let go of my fears and embraced the music. The entire school sang along with us, their energy fuelling our confidence. When we ended, the roar of applause was overwhelming. It was a moment of pure joy, a dream come true.

Since then, I have continued performing with my team, contributing as much as I can to improve our music. My maternal uncle, a passionate musician himself, has been one of my biggest supporters. When he got an electric guitar, he shared valuable tips and tricks with me, pushing me to improve even further.

Music has not only been my passion—it has been my guiding force. It has pulled me through tough times and made my happy moments even brighter. It has shaped my identity, teaching me resilience, patience, and the beauty of persistence. Every note I play carries an emotion, a story, a part of my soul.

This is why music is not just a hobby for me—it is my way of life.



# Nature

Nature, a blessing for all forms of life in the earth, provides a variety of fruits, vegetables to satisfy our hunger, provides a place to live happily and all the necessary things to sustain our lives. Nature is complete in itself. It is like a teacher who always tries to teach us valuable lessons that we have to notice only. It teaches us how to live happily together: the chirping of birds, the buzzing of bees, the blowing of wind, the blooming of flowers, the sun rays, the sound of rain, the smell of soil, says something to us, we have to try to listen the wonderful sound of nature.

It has the wonderful power to heal every wound,

it cures the

outer, it cures the inner. Sitting in nature

calms

the mind and

makes us free from every stress, fills us with

new energy

and enthusiasm. When we feel sad, stressed and alone

it talks to us and takes care of every form of life.

In the spring season it's beauty is at its peak, it

decorates

itself with the most beautiful ornaments,

with the

colourful flowers, new leaves ,the mother earth's

beauty is incredible, nature is perfect in itself and also supports,

enriches and nurtures life with its care.

Nature always provides unconditionally. It is our most important responsibility to take care of it also, like a good human being.

Priyanka  
Class XI C





## The Quiet Magic of Books

Imagine a quiet evening where soft light dances on the pages of your favorite book, and every word feels like a gentle hug. Books are like a true friend who never lets you down. They whisper stories of faraway lands and share timeless dreams, giving you a safe space to escape the noisy rush of everyday life.

For those of us who love spending quiet moments alone, books create a peaceful world as calm as a starlit sky. They remind us that even simple words can hold magic and warmth. In the words of Dr. Seuss,

"The more that you read, the more things you will know. The more that you learn, the more places you'll go."

Every page you turn is a doorway to new adventures and ideas.

Books are especially wonderful for introverts who enjoy quiet reflection. When the world seems too loud, picking up a book lets you travel to a world that is gentle and understanding. It shows you that being quiet is not the same as being alone; it is a chance to grow, dream, and listen to your inner voice.

Reading can also be like a secret treasure hunt. With each story, you discover hidden parts of yourself and learn about life's little wonders. A good book can make you laugh, teach you important lessons, and even help you feel braver when facing your fears. It is a friend that teaches you kindness, courage, and the joy of dreaming big.

Sometimes, when you're feeling down or confused, a book offers comfort and guidance. It's like a light in a dark room, gently showing you the way. Books teach us that even in the simplest stories, there is deep wisdom. They encourage us to ask questions, to wonder, and to always be curious about the world around us.

So, next time the world feels overwhelming, take a moment to curl up with a book. Let its quiet magic fill you with hope and remind you that beauty and friendship can always be found between its pages. Every story is a gentle reminder that you are never truly alone in your thoughts and dreams.

Pick up a book today and let it be your trusted companion. Allow its simple words to brighten your day and guide you on your journey. Because no matter how busy life gets, the magic of a good book will always be there, waiting just for you.

TAMANNA KATARIA  
VIII B



# NATURE

Nature, a blessing for all forms of life in the earth, provides a variety of fruits, vegetables to satisfy our hunger, provides a place to live happily and all the necessary things to sustain our lives.

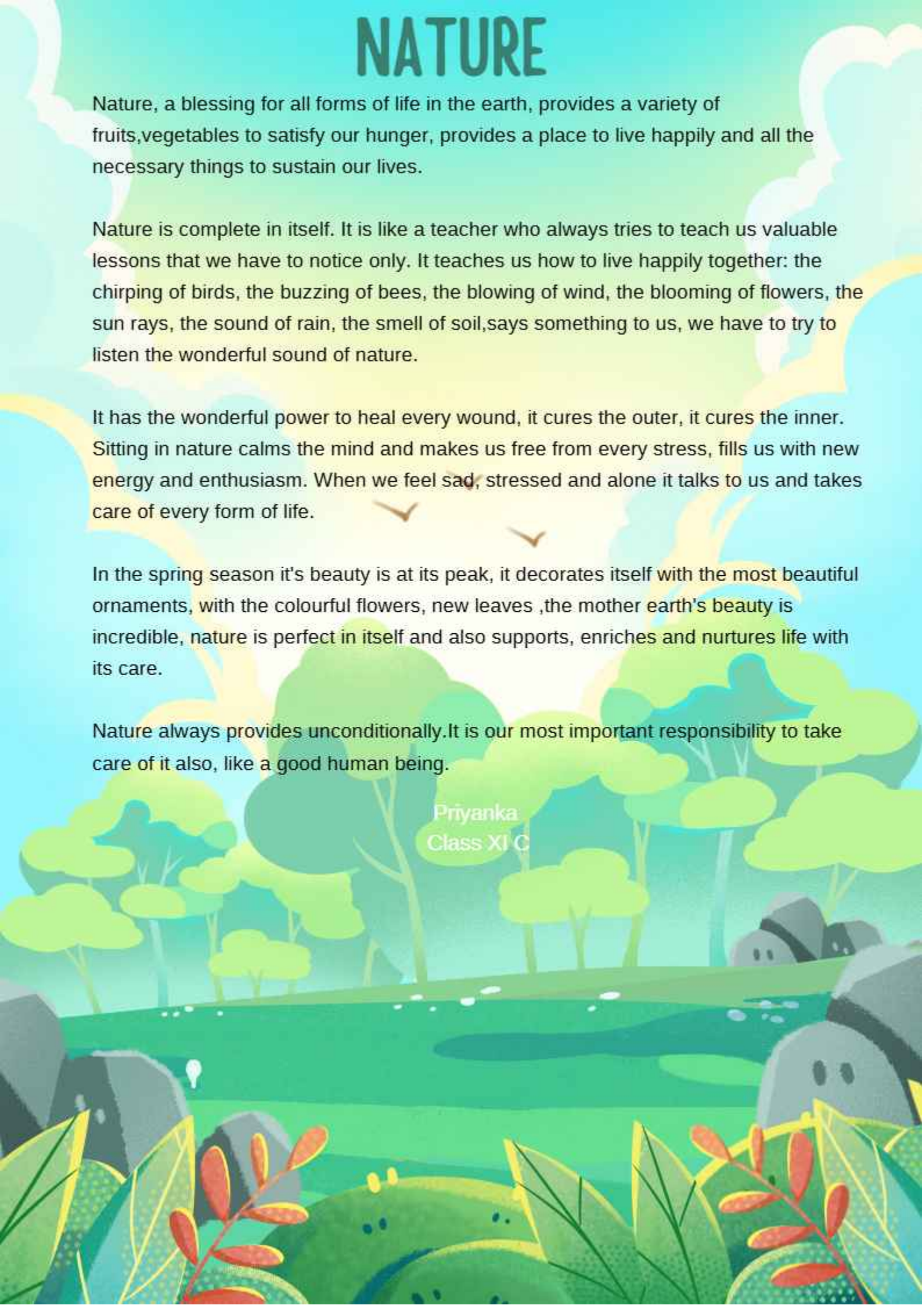
Nature is complete in itself. It is like a teacher who always tries to teach us valuable lessons that we have to notice only. It teaches us how to live happily together: the chirping of birds, the buzzing of bees, the blowing of wind, the blooming of flowers, the sun rays, the sound of rain, the smell of soil, says something to us, we have to try to listen the wonderful sound of nature.

It has the wonderful power to heal every wound, it cures the outer, it cures the inner. Sitting in nature calms the mind and makes us free from every stress, fills us with new energy and enthusiasm. When we feel sad, stressed and alone it talks to us and takes care of every form of life.

In the spring season it's beauty is at its peak, it decorates itself with the most beautiful ornaments, with the colourful flowers, new leaves, the mother earth's beauty is incredible, nature is perfect in itself and also supports, enriches and nurtures life with its care.

Nature always provides unconditionally. It is our most important responsibility to take care of it also, like a good human being.


Priyanka  
Class XI C









## The Amazing Jungle Trip




It was Monday morning, and our class was very excited. We were going on a jungle trip. When we reached there, our teacher told us to meet at the main door in two hours.




We walked deep into the jungle, enjoying the tall trees and the sounds of the birds. Suddenly, we came to an open area with many animal statues. We got lost and started shouting for help.



Then, a tiger came out of a bush, looking very hungry, and he ran towards us. We all shouted very loudly.





We were scared, but then a voice came, "Don't worry, my boy. Mom is here."



As I heard my mom's soothing voice, I slowly opened my eyes to find myself safely tucked in my bed. It was all just a dream, a vivid adventure that had felt so real. I smiled, feeling relieved, and drifted back to sleep.

**Vansh Negi**  
**Class 5A**





# How to Cure Sinusitis at Home with Yoga



Sinusitis, or a sinus infection, occurs due to the buildup of fluids in the paranasal sinuses. While it is not a severe infection initially, it can become serious if left untreated.

Paranasal sinuses are hollow, air-filled spaces in the skull and facial bones around the nose, located between the cheekbones and the nasal cavity. These sinuses play essential roles in humidifying inspired air, enhancing voice resonance, and lightening the skull.

Sinusitis is caused by fluid accumulation in the paranasal sinuses, leading to mucus blockage in the nasal passages. Several conditions can contribute to sinusitis, including enlarged adenoids, infected teeth, and exposure to secondhand smoke. Common symptoms include pain around the cheekbones and forehead. In severe cases, sinus infections can lead to facial distortions and vision impairment.

## Treatment of Sinusitis

Sinusitis treatment involves two key aspects:

### 1. Dietary Management

Proper nutrition plays a vital role in recovery by strengthening the immune system, managing symptoms, and enhancing overall health. Following a balanced diet during a sinus infection is essential.

Recommended foods include:

- Hydrating fluids
- Vitamin C-rich foods
- Anti-inflammatory foods

### 2. Physical Exercises and Yoga

Practicing specific yoga asanas can help alleviate sinusitis symptoms by improving circulation, reducing congestion, and enhancing overall respiratory health. Some effective yoga practices include:

- **Kapalbhati:** Helps to irrigate and ventilate the sinuses by expelling stale air and allowing fresh air to enter.
- **Kapal Randhra Dhouti:** Improves blood circulation and aids in mucus drainage.
- **Hastapadasana:** Should be performed to facilitate postnasal drainage of the sinuses, though it may not be suitable for acute infections.
- **Yashtikasana:** Promotes better air circulation in the body.
- **Anulom-Vilom and Pranayama:** Enhance the circulation of fresh air and improve overall respiratory function.

By following a proper diet and incorporating these yoga asanas, one can effectively manage and reduce the symptoms of sinusitis at home.



**RISHAAN BHANDARI**  
**VIII B**





# DEV BHOOMI-UTTARAKHAND

01

## INTRODUCTION

Uttarakhand is known as LAND OF GODS (Dev Bhumi). Its history dates back to prehistoric times. This beautiful state is home to many pilgrimage sites of Hindu devotees including Kedarnath and Badrinath temples, Choota Char Dham Yatra and Hemkund Sahib for Sikhs.

02

## HISTORY

Uttarakhand was part of the ancient Kuru and Panchal kingdoms. The state was ruled by the Kushans, Kanishka, Samundra Gupta, the Pauravas, Katuris, Palas, the Chanras, the Panwars and the British. Uttarakhand was part of the United Province of Agra and Awadh which was renamed Uttar Pradesh in 1950. On November 9th, 2000 Uttarakhand became the 27th state of India.

03

## GEOGRAPHIC LOCATION

Uttarakhand is located in the foothills of the Himalayas. It is bordered by China (Tibet) in the north and Nepal in the east.

04

## LANGUAGE

The official language of Uttarakhand is HINDI but it also has regional languages like Garhwali, Jaunsari, Gurjari and Kumaoni.

### SPECIAL FEATURES

Uttarakhand has a highly varied topography with snow covered peaks, glaciers, deep canyons, roaring streams, beautiful lakes and a few patches of dusty plains.

05

## PLACES TO VISIT

Nainital, Chakrata, Munsiyari, Kausani, Jim Corbett National park, Ranikhet, Almora, Dhanaulti, Auli etc. Dehradun is the capital of Uttarakhand.

**CUISINE** - Kafuli, Rabri, Khadi, Arsa, Gulthiya, Muspani, Dubke etc

06

## ESTIVALS

Kumaoni Holi, Harela, Jageshwar Fair, Khumbh Mela etc.

**MUSIC & DANCE** - Chhura, Basanti, Mangal, Pundav Nritya, Chhapeli, Bhotiya, Chooliya, Jhumela, Nati, Mokhota Dance etc.

**CONCLUSION** - Uttarakhand is like a heaven on Earth. I do invite all readers to come to get the glimpses of Kumaoni and Garhwali cultures.





## THE GAME OF KINGS: CHESS THROUGH THE AGES



Chess, grew out in India as "Chaturanga," evolved through Persia and Europe to its modern form in the 15th century. It remains a globally cherished strategic game.

### Notable Achievements of India in chess

India has produced legendary players like Viswanathan Anand, a world champion, and young stars like Praggnanandhaa and Gukesh. Gukesh has recently won the World chess championship 2024 and achieved the youngest world championship title. Their achievements continue to inspire chess enthusiasts all over india and worldwide

### Fascinating Facts

Chess has more possible positions than atoms in the universe.

"Checkmate" derives from the Persian "Shah Mat," meaning "the king is dead."

### My Chess Journey

I have won the SFA Uttarakhand Sports Championship three times and ranked 9th in the KVS National Chess Championship 2024. Chess has shaped my discipline and strategy, culminating in podium finishes. It has improved my memory power significantly and helped me in academics. The game continues to challenge and inspire me.

As Bobby Fischer said, "Chess is life."



**DEVANSH MANI KAUSHIK**

**IX B**



## MY ROLLERCOASTER RIDE

I, the one who had a great stage fear was asked to represent my school showcasing my own cultural dance form.

Hi, its me Vaidehi, I have had a great stage fear ever since I was a child and it has no past. It's just a thing in me because I lacked confidence until the day I was on a blank stage with flashing lights on me with a trembling experience. So this is the incident about a year ago when I was in 10th standard. I was walking in the corridor with my friends. When one of my friends who was practicing for her EBSB ( Ek Bharat Shreshtha Bharat) program was just passing by. The curious me wanted to know about the program so I asked her what EBSB really is. She mentioned every single detail that made me feel like participating in it. So I just

randomly asked her with no hope if there was any place for me and surprisingly there was.

She said "Yeah, there is a place for one girl only " "One girl!"

"There is a folk solo dance competition where you can perform a solo folk dance of any culture."

"Really"

"Yeah,so you can perform your own culture also."

I who knew that I couldn't from the inside..said "ok, I'm on it."

The unaware, excited, and slightly stupid me reached out to our coordinator to learn about the program details. When I found out that the program was going to be held in just three days, I was shocked! Three days? I, who didn't even know the basics of Kauda, had chosen "Kauda Niritya" to perform in my program. Kauda, the second most difficult dance form in Nepal! But in the heat of excitement, I agreed with the coordinator and started practicing on my own.

However, when I actually started practicing, I realized that this wasn't what I had thought it would be. My legs weren't in beat, my expressions were lagging, and my moves weren't smooth, made me wonder if I had made the wrong decision. The discouragement hit me too hard that I wished I could restart every single second but there was no going back and I had to keep moving forward so I started practicing beats with counting which made it real quick and surprisingly I was on beat.

Then after practicing for 3 days straight this was the time for the final showdown but a problem arose the song in which I was going to perform didn't transfer due to some technical issues and it was compulsory for every participant to have their songs in a pendrive but somehow the issue gets resolved and now I was on the stage, time seemed to slow down and I could easily hear my heartbeats, the eyes of the people in front of me were scaring my heart out,my expressions could easily tell how scared I was but at that moment I saw that someone was waving towards me and calling me and suddenly I realized that I was not there to win or lose I was there because of someone's trust on me which made me felt relieved and the performance went quite smooth and surprisingly great. When I came off the stage, the music sir and all the teachers sitting there appreciated me. I felt so shy that I hurriedly went behind and sat on my seat. As soon as the event was over everyone came to my seat and started asking me about my culture and I felt very happy and proud. But now it was the game of terror - the result time, now everyone had expectations from me, accept myself. I had no hope more than third position I was really scared at that point. The names started getting announced, 3rd was announced, 2nd was announced but neither of the positions was mine. I felt bad for everyone and I got up from my seat to say sorry to them and in just that time the position was announced....

"And the 1st position goes to KV OLF !" And everyone started shouting, hurray!!

It's you Vaidehi and the shine of happiness in their eyes really made me feel so happy that I shouted looking at them. But somehow I knew even if I hadn't won the competition they all would still have supported and comforted me with their love and care. THANK GOD, I didn't give up, their happiness was worth my hard work.

**VAIDEHI**

**XI B**



# BAGLESS DAYS



Our school PM Shri KV OLF had organised bagless days for students and 23rd October 2024 was our first bagless day where I learnt how to make Aipan and pen holders. Artists came to our school and taught us how to do Aipan art. We started making Aipan, some made on a bottle, some on cardboard, some on karva and some on the diyas. I painted karva. Teachers took our pictures and artist helped us to make Aipan on different surfaces and our first activity was done.

In the second activity we went to the primary ground and met another artist there we made pen holders. I used a plastic container, jute thread, ribbon and stars. We enjoyed a lot while making the things and after completing and submitting our pen holders we played a lot. My experience was very good and I learnt new things.

Kavyansh Tiwari  
VII B



On the second day of bagless days, that is on 24th October 2024, we learnt Dot Mandala art and Lippan art. Dot Mandala is the classical version of Mandala art form with its genesis in Hindu and Buddhist theosophy – often painted delicately on temple walls and sometimes even roofs, beginning from the center, this art form heads outwards using only dots to create captivating visual stories. Mandalas symbolize universal enlightenment brought about by their symmetrical and detailed look. Lippan Art, also known as Mud and Mirror Work, originated in the Kutch region of Gujarat, India. The beautiful themes and details of mud work are generally peacocks, camels, elephants, mango trees, temples, and day-to-day exercises of the existence in Kutch and portrayed through art. Ideally, Lippan art is majorly done as freehand drawings and majorly has geographic structures and shapes. The mud-reflect work is intricately finished on walls, parcels, roofs, entryways, and floors. I learnt how to remain calm and focused while doing any work. It was a great learning experience.

Kamakshi Rawat  
VIII B



On 25th October 2024, the third day of bagless days, we had a memorable experience learning more creative activities with Nirupama Bhatt ma'am and Preeti Sagar ma'am. We started by making tealight candle holders which were made from old CDs that were both beautiful and unique. Later, we created jute flowers from a jute sack which was also a great way to work with natural materials and add an artistic touch to everyday items. These activities taught us how to create beautiful things from simple materials and helped us understand the value of creativity in daily life. Overall, the experience was wonderful and I am truly grateful to the school authorities for organising bagless Days, giving us the chance to explore art and craft in such a hands-on way. Thank you for giving us this enriching opportunity.

Tamanna Kataria  
VIII B





# Creative Projects

Art  
Section









